इफ़िसियों

इफ़िसुस चर्च को लिखा गया पत्र

लेखकः

प्रभु यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस

समयः

लगभग 60 ए.डी. के आस-पास

विषयः

इस पत्र में अनेक खास मुद्दे हैं

- विश्वासियों के उद्धार के लिए ज़रूरी अनुग्रह (असीमित शर्तहीन कृपा) की महिमा में परमेश्वरीय उद्देश्य
- मसीह में परमेश्वर की कृपा से विश्वासियों का ऊँचा स्थान
- मसीह की देह की बड़ी सच्चाई
- इस बड़े ओहदे की सच्चाई की रोशनी में जिया जाने वाला जीवन
- विश्वासियों का आत्मिक या भीतरी संघर्ष और उस पर जीत

---

1 यीशु मसीह के पवित्र और
विश्वसनीय लोगों के नाम जो
इफ़िसुस में हैं, जिनके लिए परमेश्वर
पिता की इच्छा से पौलुस, यीशु मसीह
का प्रेरित है। 2हमारे स्वामी यीशु
मसीह और स्वर्गिक पिता की ओर
से तुम्हें अनुग्रह (शर्तहीन कृपा) और
शान्ति मिलती रहे।

3हमारे यीशु मसीह के पिता और
परमेश्वर की बड़ाई हो, जिन्होंने
हमें स्वर्गिक स्थानों में सारी आत्मिक
आशीषों से भर दिया है। 4जिस तरह
से उन्हों ने संसार की नींव डाले
जाने से पहले हमें अपने में चुन

1:1 "मसीह के"- इस चिट्ठी में यह शब्द बार-बार आए हैं - पद 3,4,7,12,13; 2:6-7,10,13; 3:6,11,21; 4:32; 6:10. यह मसीह के साथ हमारी एकता को दिखाती है। यूहन्ना 17:20-23; रोमि. 6:3-8. विश्वासियों की हर एक आत्मिक आशीष उनके "मसीह में होने" - की वजह से है। यीशु के बगैर, उनके पास कुछ नहीं है और वे कुछ नहीं हैं।

"पवित्र"- रोमि. 1:7.

"विश्वसनीय"- वे लोग जो मसीह में विश्वास से जीवन बिता रहे थे।

"इफ़िसुस"- प्रे.काम 18:19; 19:1-41.

"प्रेरित"- रोमि. 1:1; 1 कुरि. 1:1; गल. 1:1.

1:2 रोमि. 1:7.

1:3 "यीशु मसीह के पिता और परमेश्वर"- इस पृथ्वी पर मनुष्य बनने से यीशु ने परमेश्वर को पिता कहा - मत्ती 27:46; यूहन्ना 20:17. ऐसा करने से वह यह नहीं कह रहे थे कि वे खुद परमेश्वर नहीं हैं। तुलना कीजिए यूहन्ना 8:24,58; 20:28-29; मत्ती 11:27; फ़िलि. 2:6; लूका 2:11 भी देखें।

"स्वर्गिक स्थानों"- यह भी एक खास बात है जो इफ़िसियों के खत में मिलती है। 1:20; 2:6; 3:10; 6:12. यूनानी में यह बहुवचन "स्वर्गिक स्थानों" - है। यह स्वर्ग में परमेश्वर के रहने के स्थान से बढ़कर है (6:12)। ऐसा लगता है, यह अनदेखी आत्माओं की दुनिया जहाँ परमेश्वर का शासन है, वह तो है ही, साथ ही वह जहाँ शैतान परमेश्वर के शासन का विरोध करता है।

परमेश्वर सब से ऊँचे पर हैं। शैतान और बुरी आत्माएँ आत्मिक आसमान के सब से निचले भाग में विश्वासियों से संघर्ष करती हैं। परमेश्वर की निगाह में विश्वासी आसमानी दायरे के सब से ऊपरी भाग में हैं (2:6) क्योंकि उनके प्रधान और उनके प्रतिनिधित्व करने वाले (परमेश्वर) वहीं हैं (1:22) और वे उन में (यीशु में हैं)। हालाँकि वे इस पृथ्वी पर अनदेखे आत्माओं के दायरे में दुष्ट व्यक्तियों से युद्ध कर रहे हैं।

"सारी आत्मिक आशीषों"- यह आत्मिक दायरे की बरकतें हैं। यह परमेश्वर की बड़ी कृपा जिससे हम बचते हैं, हमें आत्मिक बनाती है और मसीह के लिए जीने में मदद करती है। हमेशा के लिए उनके साथ रहने के लिए यह हमें स्वर्ग तक पहुँचाती है। पौलुस यह नहीं कहता है कि स्वर्गिक पिता हमको शारीरिक, भौतिक और मानसिक तरीके से आशीषित नहीं करते हैं। लेकिन यहाँ उसका ज़ोर इन बातों पर नहीं है। पौलुस इन में से कुछ आत्मिक आशीषों का वर्णन करता है - पद 5,7,13,14,17-19; 2:5-6,10,13-19,22; 3:16-17,20; 4:7,13,24; 5:8,18,25-27; 6:10,13.

"भर दिया"- यहाँ क्रिया बीते समय की है। स्वर्गिक पिता ने विश्वासियों को सभी संभव आत्मिक बरकतें दी हैं। ये सभी मसीह में मिलती हैं। विश्वासी मसीह में हैं, जहाँ आशीषें हैं। उत्पत्ति 12:1-3; गिनती 6:22-27; व्यव. 28:3-14; भजन 1:1; 119:1; मत्ती 5:3-12; प्रे. काम 3:26; गल. 3:9,14 का मतलब है सभी मसीही, कुछ एक नहीं।

लिया था, ताकि हम उनके सामने पवित्र और बिना किसी दोष के ठहराए जाएँ। 5अपनी इच्छा के भले उद्देश्य के अनुसार पहले ही से उन्हों ने प्रेम में यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने गोद लिए हुए बच्चों की तरह ठहराया है। 6यह उनकी असीम कृपा और महिमा की बड़ाई के लिए जिसके द्वारा उन्हों ने हमें अपने प्रिय में स्वीकार किया है। 7उन्हीं में हमें उनके खून से आज़ादी यानि अपराधों की क्षमा, उस अनुग्रह के धन (कृपा के खज़ाने) के कारण है, 8जिसे उन्हों ने सारे ज्ञान और समझ के साथ हमारे ऊपर उण्डेल दिया है।

1:4-6 "चुन लिया"- मरकुस 13:20; यूहन्ना 15:16,19; रोमि. 8:33; 2 थिस्स. 2:13; 1 पतर. 2:9. यूहन्ना 6:37; 17:6 से मिलान करें। इसके पहले विश्वासी पैदा हुए, दुनिया बनायी गयी, परमेश्वर ने भविष्य के समय को देख हम सब को मसीह में देखा और ऊँचे स्थान के लिए ठहराया। देखें रोमि. 8:29-30. यहाँ 4-6 में पौलुस परमेश्वर के चुनाव और विश्वासियों के पहले से ठहराए जाने के बारे में सिखाता है।

पहली बात - "परमेश्वर चाहते थे कि हम पवित्र और निर्दोष ठहराए जाएँ" - पद 4; 5:22-27; यूहन्ना 17:17-19; फ़िलि. 2:15; तीतुस 2:14. 'प्रेम में' आगे या पीछे जोड़ा जा सकता है।

दूसरी बात- परमेश्वर चाहते थे कि हम उनके बच्चे (संतान) ठहरें (पद 9)। यूहन्ना 1:12-13; रोमि. 8:15; 2 कुरि. 6:17-18; यूहन्ना 3:1-2. "गोद लेना" गोद लिए जाने के बारे में रोमि. 8:23 और नोट्स देखिए। आत्मिक जन्म की वजह से विश्वासी स्वर्गिक पिता की सन्तान बन चुके हैं। (यूहन्ना 3:3-8) उनके जी उठने के समय वे गोद लिए जाएँगे। मतलब यह कि इस तरह से खुले रूप में हमारे गोद लिए जाने का ऐलान किया।

तीसरी बात - परमेश्वर यह चाहते थे उनकी बड़ी दया के लिए बड़ाई करें। 2:8-9;। 1 कुरि. 1:29-31; गल. 6:14. यदि लोग खुद को बचा सकते थे, तो सारी बड़ाई उन्हीं को मिलती। ऐसे किसी भी घमण्ड की संभावना को स्वर्गिक पिता ने खतम कर डाला। परमेश्वर की महिमा से भरी हुयी कृपा ही लोगों को मुक्ति देती है। इसलिए सारा सम्मान उन्हीं के लिए है। कृपा को कमाया नहीं जा सकता इसलिए सारा आदर उन्हीं के लिए है (रोमि. 4:4-5; 6:23; 11:5-6)। अनुग्रह (असीम कृपा) पर कुछ और नोट्स देखे जा सकते हैं वे हैं - यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7. प्रेम शब्द देखें जो 4 पद के आखिर में है। यह परमेश्वर की सृष्टि से पहले के चुनाव के बारे और ठहराए जाने के बारे में है-2:4; यिर्म. 31:3; रोमि. 5:8; 8:39; यूहन्ना 3:1,16; 4:8.

1:5 "पहले ही से...ठहराया"- रोमि. 8:29 के नोट्स को देखें और पूर्वज्ञान के बारे में जो रोमियों के आखिर में हैं।

1:6 "प्रिय"- (पद 6) मसीह हैं - मत्ती 3:17; यूहन्ना 17:24. विश्वासी "मसीह में" हैं इसलिए पूरी तरह से उनके प्यार और कृपा के पास भी।

"हमें...स्वीकार किया"- यह एक अजीब सच्चाई है बहुत से विद्वान कहते हैं कि यहाँ यूनानी शब्द का मतलब है "मुफ़्त में दिया" ।

1:7 "आज़ादी"- लूका 2:38; रोमि. 3:24; 1 कुरि. 1:30; गल. 3:13; कुल. 1:14; इब्रा. 9:12,15. भजन 78:35; मत्ती 20:28 के नोट्स। छुड़ाये जाने में गुनाहों की माफ़ी भी है, क्योंकि दुष्टता ने हमें बान्ध रखा था। मसीह ने हमें अपना खून दिया और अपनी ज़िन्दगी को हमारे लिए उण्डेल दिया।

"क्षमा"- 4:32; मत्ती 6:12; 9:6; 12:31; मरकुस 2:7; लूका 24:47; प्रे.काम 13:38; 26:18; रोमि. 4:7; कुल. 2:13; 1 यूहन्ना 1:9. अपराधों की क्षमा अच्छे बर्ताव से नहीं पायी जा सकती। यह मसीह में विश्वासियों के लिए मुफ़्त है।

अनुग्रह के धन (कृपा का खज़ाना) क्या है-तुलना करें 2:4,7; रोमि. 2:4; 10:12. इस दुनिया में यही सच्ची दौलत है जो विश्वासियों को सचमुच में धनी बनाती है। पद 3; 2 कुरि. 8:9; 1 कुरि. 3:21-23.

1:8 शब्द "उण्डेल" पर ध्यान दें। परमेश्वर भलाई करने में न ही कंजूस हैं और न ही हिचकिचाते हैं। यह भी ज़रूरी नही कि हम उन पर ज़ोर डालें कि वह हमें आशीष दें। हमें स्वर्ग में किसी संत की भी ज़रूरत नहीं कि वह हमारे लिए बिनती करे कि हम आशीषें प्राप्त करें। परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा था ताकि वह मर जाए और हम सब उनकी मदद पा सकें। रोमि. 8:32 से मिलान

9जिस भले लक्ष्य की कामना परमेश्वर
पिता ने पहले से कर रखी थी, उसके
अनुसार उन्हों ने हम पर अपनी इच्छा के
रहस्य को प्रगट किया। 10ऐसा इसलिए
है, कि वह स्वर्ग और पृथ्वी की सब
बातों को समयों के पूरा हो जाने तक
मसीह में सब कुछ इकट्ठा करें।
11साथ ही साथ यीशु मसीह के कारण
हम ने परमेश्वर पिता से मीरास पायी है,
क्योंकि उन्हों ने हमें पहले ही से चुन लिया
और यह उनकी इच्छा से है। 12ताकि
हम जिन्होंने पहले से मसीह में भरोसा
किया उनकी महिमा से भरे परमेश्वर की
बड़ाई करें। 13जब तुम ने सत्य का वचन
(मुक्ति का संदेश) सुना तब विश्वास
करके प्रतिज्ञा की आत्मा की मोहर

करें। जिस तरह से वह अपने अस्तित्व को खो नहीं सकते, भलाई करना रोक नहीं सकते, हमेशा तक वह अपनी बड़ी कृपा के धन को उण्डेलते रहेंगे -2:7. मन में आज़ादी, क्षमा, दूसरी सभी भलाईयाँ परमेश्वर हमें "सारे ज्ञान और समझ" से देते हैं, शायद इसका मतलब यह होगा कि हमारे साथ उनका रवैया बुद्धिमानी का था। यह सच है। लेकिन शायद इसका मतलब यह है कि मसीह में स्वर्गिक पिता ने विश्वासियों के लिए पूरे आत्मिक ज्ञान और परख को रखा है। तुलना कीजिए कुल. 1:9; 2:2-3; 1 कुरि. 2:7-10.

1:9-10 "रहस्य"- 3:3; 4:9; 5:32; 6:19; मत्ती 13:11 पर नोट्स देखें। रोमि. 16:25-26. जिस रहस्य को परमेश्वर ने दिखाया और जिसके बारे में पौलुस यहाँ बताता है, वह यह है: भविष्य में जब समय आएगा, याहवे परमेश्वर एक नयी व्यवस्था या नए क्रम की शुरूआत करेंगे और यीशु को सर्व प्रमुख रखेंगे। तुलना करें रोमि. 8:21; मत्ती 19:28; 1 कुरि. 15:25; फ़िलि. 2:9-11; प्रका. 20:4-6.

1:11-12 "मीरास पायी है"- यह भी बीते हुए दिन की बात है। हम ने इसे हासिल किया है, लेकिन पूरी तरह से हम इस में दाखिल नहीं हुए हैं। पद 14; 1 पतर. 1:4.

"पहले ही से चुन लिया"- पद 5.

"इच्छा"- कभी-कभी इस दुनिया में ऐसा लगता है कि घटनाएँ उल्टे-पुल्टे रूप में होती हैं। बहुत सी घटनाओं में कुछ कारण नहीं दिखता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी बुद्धि सीमित है। परमेश्वर के पास एक सिद्ध योजना है और उसे वह पूरा कर रहे हैं, तुलना करें रोमि. 8:28; 11:33-36; यशा. 46:10. परमेश्वरीय योजना खासकर विश्वासियों के उस भविष्य से सम्बन्धित है, जिसकी योजना उन्हों ने रखी है। और वह योजना है "परमेश्वर की बड़ाई" - पद 14; 3:21; रोमि. 16:27; गल. 1:5; फ़िलि. 1:11; इब्रा. 13:21; 1 पतर. 2:9; प्रका. 4:11; 1 कुरि. 10:31.

1:13 "तुम ने"- यहाँ वह गैरयहूदियों की तरफ़ इशारा कर रहा है। पद 12 में वह उनके विषय कहता है जो पहले मसीह में आशा रखने वाले थे। यानि कि यहूदी विश्वासी । परमेश्वर के साथ जो पहली व्यवस्था थी, उसमें केवल यहूदियों को लाभ थे जो गैर यहूदियों को नहीं थे। अब गैर यहूदी विश्वासियों को भी मसीह में आशीष मिली है। इस चिट्ठी का यह एक खास विषय है - 2:11-22; 3:6. यीशु मसीह का सुसमाचार "सत्य का वचन" कहलाता है। कुल. 1:5; 2 तीमु. 2:15; याकूब 1:18. इसे, सच के परमेश्वर ने प्रगट किया था। यह शुरू से आखिर तक सही भी है -यूहन्ना 17:17; 12:49-50; 8:40; 7:16-17. यह "मुक्ति" का संदेश है। रोमि. 1:16 के नोट्स देखें। इफ़िसियों के विश्वासियों ने सिर्फ़ सत्य वचन को सुना ही नहीं परन्तु विश्वास भी किया। मत्ती 13:14-15. भरोसा करने से पवित्र आत्मा की मोहर लग जाती है।

"प्रतिज्ञा की"- लूका 24:48; प्रे.काम 1:4-5.

"मोहर"- पवित्र आत्मा स्वयं मोहर है 4:30. मोहर मालिकपन को दिखाती है - पद 14; 2 तीमु. 2:19; रोमि. 8:9 स्वर्गिक पिता पवित्र आत्मा उन को देते हैं, जो उनके हैं। पवित्रात्मा को हासिल किया जाना ही उन्हें परमेश्वर का होने को दिखाता है। और कोई बात यह नहीं दिखा सकती है। जब व्यक्ति यीशु पर भरोसा रखता है, परमेश्वर का आत्मा उसमें निवास करने आ जाता है - गल. 3:2,5,14; 5:18; मत्ती 3:16-17; 28:19; यूहन्ना 14:16-17 और प्रे.काम 1:4 में नोट्स देखें।

प्राप्त की, 14वह हमारे उत्तराधिकार के
बयाने की तरह इस लिए दिया गया है,
कि परमेश्वर के खरीदे हुए छुटकारा
(मुक्ति, उद्धार) पाएँ और परमेश्वर की
महिमा की स्तुति हो। यह एक और
कारण है कि हम परमेश्वर की महानता
की बड़ाई करें।

15इसलिए मसीह पर तुम्हारे विश्वास
और पवित्र लोगों के लिए जो तुम्हारा
प्यार है, 16उसे सुनकर मैं भी तुम्हारे लिए
धन्यवाद के साथ प्रार्थना करने से नहीं
रूकता। 17मेरी बिनती यह है कि हमारे प्रभु
यीशु के परमेश्वर, महिमा के पिता तुम्हें
आत्मिक ज्ञान और प्रकाश और परमेश्वर
के ज्ञान में तुम्हें बुद्धि और ज्योति दें। 18मैं
प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे मन (समझ)
की आँखें खुल जाएँ ताकि तुम जानो कि
तुम्हारे बुलाए जाने की आशा और पवित्र

1:14 स्वर्गिक पिता भरोसा करने वालों को पवित्र आत्मा "बयाने" (जमा धनराशि) गारण्टी की शक्ल में देते हैं। 2 कुरि. 5:5 से तुलना करें। इसका मतलब यह हुआ कि जो काम उन्हों ने शुरू किया है, उसे पूरा करेंगे (फ़िलि. 1:6)। वह यह कि जिस मीरास का वायदा किया है, उसे ज़रूर देंगे। (रोमि. 8:17; कुल. 1:12; इब्रा. 6:12; 9:15; 1 पतर. 1:4)। वह हमें तब तक संभालेंगे जब तक हमारी देह उठायी न जाए (रोमि. 8:23), और हमेशा के लिए छुड़ायी न जाए (यूहन्ना 14:16)। विश्वासी स्वर्गिक पिता की दौलत हैं (1 कुरि. 6:19-20)। वह बड़ी अच्छी तरह से उन्हें संभालेंगे और खोएँगे नहीं। तुलना कीजिए यूहन्ना 6:39-40; 10:27-28; 17:11-12. यह भरोसा कि हम ने उनकी आत्मा को पाया है हमें यह निश्चयता दगों कि यह सब सच है।

"परमेश्वर...बड़ाई"- पद 6,12.

1:15-16 "विश्वास", "प्यार"-1 थिस्स. 1:3 ये दोनों गुण सच्चे विश्वासियों में हमेशा पाए जाते हैं। कहलाया जाने वाला विश्वास जिससे विश्वासियों के लिए प्यार नहीं पैदा होता है, सच्चा विश्वास नहीं है - 1 यूहन्ना 3:14; 1 कुरि. 13:2.

1:16 "धन्यवाद"- पौलुस ने इसका अभ्यास किया था (रोमि. 1:8; 1 कुरि. 1:4; फ़िलि. 1:3; कुल. 1:3; 1 थिस्स. 1:3) चाहे वह विश्वासियों को जानता था या नहीं। चाहे वे उसकी सेवकाई से बचे थे या दूसरों की, वह उनके लिए खुश था और धन्यवादी भी। विश्वासी परमेश्वर और उसकी कृपा की शान हैं (पद 6,12,14)। सब से ज़्यादा जिस बात को पौलुस चाहता था वह यह कि लोगों की मुक्ति से और पवित्र जीवन से परमेश्वर को इज़्ज़त मिले।

"प्रार्थना"- रोमि. 1:9; 1 थिस्स. 1:2; 1 तीमु. 1:3.

1:17 "बिनती"- पौलुस की यह बिनती पवित्रात्मा से प्रेरित थी। वह उन चीजों को प्रगट करता है, जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि वे लोगों के पास हों। यह दिखाता है कि हम क्या कर रहे है। अभी उसने कहा था कि उन लोगों ने पवित्र आत्मा पाया है (पद 13)। इसलिए वह यह प्रार्थना क्यों करता है कि पवित्रआत्मा पाएँ? वह प्रार्थना करता है कि जो पवित्रात्मा उन में है वह बुद्धि की आत्मा दे। वह यह दुआ करता है कि पवित्रआत्मा जो उन में है, उन्हें बुद्धि की आत्मा (योग्यता) दे - जिससे वे परमेश्वर के वचन की गहरी सच्चाई जानें। उसने प्रार्थना इसलिए की क्योंकि वह चाहता था, कि वे परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानें।

परमेश्वर को खुद जानना विश्वासियों का बड़ा खज़ाना है । उनका आत्मिक जीवन इसी से शुरू होता है और इसी के साथ बढ़ता है- यूहन्ना 17:3; 2 कुरि. 4:6; इफ़ि. 4:13; फ़िलि. 3:8,10; कुल. 1:10; 2 पतर. 3:18 पौलुस को यह मालूम था कि पिता को व्यक्तिगत तरीके से जानने और जानते रहना परमेश्वर से रोशनी मिलने पर है। ज़रूरी है कि परमेश्वर अपने आप को ज़ाहिर करें, नहीं तो हम कभी उन्हें जान नहीं सकते, मत्ती 11:27; 1 कुरि. 2:10-11.

1:18-19 परमेश्वर सिर्फ़ यह नहीं चाहते कि हम उन्हें जानें, लेकिन यह कि विश्वासियों के लिए जो कुछ तैयार किया है, वह जानें।

"आँखें"- दो तरह की आँखें हैं - शारीरिक जो दिखने वाली चीजों के लिए हैं। आत्मिक जो अनदेखी बातें देखती हैं (2 कुरि. 4:18; इब्रा. 11:13; यूहन्ना 4:35)।

अविश्वासियों की भीतरी आँखें बन्द और अन्धी हैं - मत्ती 13:15; 2 कुरि. 4:4; 1 यूहन्ना 2:11; प्रका. 3:18. परमेश्वर ने विश्वासियों की आँखों को खोला है - प्रे.काम 26:18; यूहन्ना 9:39; 2 कुरि. 4:6. जब ऐसा होता है, वे आत्मिक सच्चाई समझने लगते हैं, जिसे वे किसी और तरह से नहीं समझ सकते हैं। वे अपने आप

लोगों के लिए उनकी महिमामय मीरास
की दौलत क्या है। 19और हम विश्वास
करने वालों के लिए उनकी अपार शक्ति
की बढ़ती जाने वाली महानता क्या है। यह
उनकी शक्ति के प्रभाव के उस काम के
कारण है, 20जो परमेश्वर ने यीशु मसीह
में किया कि यीशु को मरे हुओं में से जी
उठाकर और स्वर्गिक स्थानों में अपने
दाहिने हाथ बैठाकर, 21और यीशु को
अभी और आने वाले समयों के किसी भी
शासन, अधिकार, शक्ति, प्रभुता और नाम
के बहुत ऊपर ठहराया। 22सब कुछ उनके
पैरों के नीचे करके उन्हें प्रमुख ठहराकर
चर्च को दे दिया। 23चर्च उनकी देह है,
मसीह से भरपूर है, जो अपनी उपस्थिति
से सभी स्थानों को भर देते हैं।

को समझने लगते हैं और अपने परमेश्वर को भी और यह भी कि मुक्ति है क्या। लेकिन एक ही पल में विश्वासी सब कुछ समझते नहीं हैं। परमेश्वर ने शुरूआत में उन्हें रौशन किया था और लगातार करते रहते हैं।

इसलिए पौलुस ने यह बिनती की - एक ऐसी बिनती जिसे अपने लिए और दूसरों के लिए हमें करनी चाहिए। बिना आत्मिक रोशनी पाए हुए वे चाहे बाईबल कितनी पढ़ें वे ज्यादा बुद्धिमान नहीं बनेंगे। 2 कुरि. 3:15 से तुलना करें। पौलुस ने प्रार्थना की थी कि वे तीन बातें समझेंः आशा, परमेश्वरीय मीरास और उनकी शक्ति।

"आशा"- रोमि. 5:2; 8:23-25. विश्वासियों की उम्मीद यह है कि मसीह की तरह बनें और हमेशा तक उनके साथ रहें - रोमि. 8:29; 2 कुरि. 3:18; 1 यूहन्ना 3:2-3; यूहन्ना 17:24.

"मीरास"- परमेश्वर के द्वारा मसीह में विश्वासियों के पास मीरास है (पद 14)। परमेश्वर के पास संतों में हम उनकी मीरास हैं। और उसकी कीमती सम्पत्ति और दौलत हैं। वह लोगों को इतना चाहते थे कि अपने बेटे की जान की बाज़ी लगा दी (पद 7)। मरे हुओं में से जी उठने के समय वह अपनी मीरास को दावे के साथ ले लेंगे। 1 थिस्स. 4:16-18.

1:19 "शक्ति"- परमेश्वर की वह ताकत जो हम में हैं, हमारे लिए है, हमारी आशा को पूरी करती है। यह इस बात की गारण्टी है कि वह अपनी मीरास को हासिल कर लेंगे। उनकी शक्ति इतनी महान है, कि किसी और शक्ति से तुलना नहीं की जा सकती है। इसलिए वह योग्य हैं कि अपने लोगों को संभाल लें - यूहन्ना 10:29. अगले पद में पौलुस इस बात का उदाहरण देता है कि परमेश्वर ने क्या किया है, ताकि हम जानें कि परमेश्वर हमारे लिए भी कर सकते हैं।

1:20-21 इन्सान के इतिहास में हम परमेश्वर की ताकत का प्रदर्शन यीशु की मौत और जी उठने में देखते हैं - मत्ती 28:6; मरकुस 16:6,19; लूका 24:6-7,51; प्रे.काम 1:3,9; 2:32-33; रोमि. 1:4; फ़िलि. 2:9-11; इब्रा. 1:3. मसीह अपने पिता के सिंहासन पर बैठे हैं। इस बनायी गयी सृष्टि और इसके सभी अधिकारियों और ताकतों के ऊपर की जगह यीशु की है - कुल. 2:10; प्रका. 1:5. इस दुनिया में ऐसा कोई इन्सान या स्वर्गदूत न हुआ है और न है, जो शक्ति, अधिकार, शान और इज़्ज़त में यीशु के पास भी आ सके।

परमेश्वर की वही ताकत जिसने यीशु को जिलाया था, हम में और हमारे लिए काम कर रही है - पद 19. इस वजह से हम जीत से भी बढ़कर हैं - रोमि. 8:37. इसी तरह से हम इस निर्दयी दुनिया में रह सकते हैं, दुनिया शरीर और शैतान पर जीत हासिल कर सकते हैं और अपने पृथ्वी के जीवन को खुशी से बिता सकते हैं। अगर ऐसा नहीं होता है तो ऐसा इसलिए है कि हम दी गयी ताकत/अधिकार का उपयोग नहीं कर रहे हैं।

1:22-23 "उनके पैरों के नीचे"- प्रे.काम 2:34-36; इब्रा. 1:13; 2:8-9; 10:13.

1:22 "प्रमुख"- 4:15; 5:23; कुल. 1:18; 2:19. सिर्फ़ मसीह सच्ची कलीसिया के प्रधान हैं। सिर का मतलब है चलाने वाले। यह दिमाग या भेजे की तरफ़ इशारा है, जो योजना बनाता, सोचता और देह को निर्देष देता है। मसीह केवल वहीं नहीं जो मण्डली के ऊपर हैं वह परमेश्वर के आत्मा से ऐसे हैं। वही जीवन और वही आत्मा उन में हैं।

1:23 "चर्च"- का यहाँ मतलब है आत्मिक देह है जो उनके विश्वासियों से बनती है -यूहन्ना 17:20-23; 1 कुरि. 12:12-13; मत्ती 16:18 में नोट्स देखें।

"भरपूर"- मसीह सारी सृष्टि को भरते हैं -4:10; कुल. 1:17 सच्ची मण्डली उनकी भरपूरी है और उन से ही बनती है। और बिना देह के एक सिर को पूरा और सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। पद 23 का एक मतलब यह लगाया जा सकता है। दूसरा यह कि मसीह परमेश्वर की भरपूरी हैं। कुल. 2:9-10 से तुलना करें।

2 तुम जो अपने अपराधों और दुष्टता
में मरे हुए थे उन्हों ने तुम्हें जीवन
दिया। 2पिछले समयों में तुम इस संसार
के तौर तरीकों, आकाश के अधिकार
के शासक (शैतान) यानि वह आत्मा
जो अभी भी आज्ञा न मानने वालों में
काम करता है, उसी के अनुसार जीवन
जीते थे। 3और हम सभी उन्हीं में से थे,
जिनका जीवन, पुराने स्वभाव, मन की
लालसाओं और उनको पूरा करने में बीत
रहा था और दूसरों के समान स्वभाव
से परमेश्वर की सज़ा के आधीन थे।
4लेकिन परमेश्वर ने जो दया में धनी हैं,
अपने बड़े प्रेम की वजह से, हमें प्यार
दिया। 5उस समय भी जब हम अपनी
दुष्टता की स्थिति में मरे हुए थे, तब
परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ जिला
दिया (अर्थात् असीम दया के कारण
हमें मुक्ति मिली)। 6तथा हमें अपने
साथ उठाकर स्वर्गिक स्थानों में यीशु

2:1-10 इन पदों में पौलुस 1:19 में शुरू किए गए विषय को जारी रखता है। "असीम कृपा के बढ़ते हुए महान" उसने 1:20-23 में दिखाया था कि किस तरह से यह शक्ति मसीह में जारी थी। अब वह दिखाता है कि यह किस तरह से विश्वासियों में और उनके लिए कार्यरत है। परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और स्वर्ग (1:20) तक उठाया। यीशु ने विश्वासियों को भी आत्मिक मौत से जिलाया और उन्हें उठाया भी (5:6) परमेश्वर की बड़ी ताकत ने मसीह को मण्डली का प्रधान बनाया (1:22)। इसी ताकत ने विश्वासियों को नयी सृष्टि बनाकर मसीह से जोड़ दिया। (पद 10)।

2:1 "मरे हुए"- मसीह से अलग किए हुए किसी व्यक्ति के पास सच्चा आत्मिक जीवन नहीं है। इसलिए कि हर एक व्यक्ति से जो अपेक्षा है, वह नहीं करता है। (रोमि. 3:23)। प्रत्येक जन आत्मिक तरीके से तब तक मरा हुआ है जब तक मसीह उसे नयी ज़िन्दगी न दे। इस मौत का मतलब है स्वर्गिक पिता के जीवन से और संगति से अलग होना। 4:18; यशा. 59:1-2. उत्पत्ति 2:17; यूहन्ना 5:24; रोमि. 7:5; 8:6; कुल. 2:13; 1 तीमु. 5:6; याकूब 1:15; 1 यूहन्ना 3:14. यही एक कारण है कि मुक्ति के लिए नया जन्म ज़रूरी है। देखें यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8.

2:2 "संसार के तौर तरीकों"- 1 यूहन्ना 2:16; यूहन्ना 1:10; 7:7; 14:17; 16:8; रोमि. 12:2; 1 कुरि. 1:21; याकूब 4:4; 2 पतर. 1:4.

"आकाश के अधिकार के शासक"- यह शैतान है। वह आत्मा के रूप में है जो आकाशीय स्थानों (6:12) के निचले भाग में काम करता है। ऐसा लगता है कि पृथ्वी के वातावरण में से वह अपना शासन करता है। उसे इस दुनिया का "ईश्वर" - और शासक कहा गया है - यूहन्ना 12:31; 2 कुरि. 4:4. वह उन सभी में काम कर रहा है जो यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं। यूहन्ना 8:44; प्रे.काम 5:3; 2 तीमु. 2:26 से तुलना करें।

2:3 "हम सभी"- रोमि. 3:9,19; तीतुस 3:3.

"पुराने स्वभाव"-इसका मतलब है वह स्वभाव जो जन्म के समय माता-पिता से मिलता है। उत्पत्ति 2:21; भजन 51:5; 58:3; रोमि. 3:9-19.

"सज़ा"- पाप के खिलाफ़ परमेश्वर का गुस्सा बाईबल में सब जगह है। गिनती 25:3; भजन 90:7-11; यूहन्ना 3:36; रोमि. 1:18. क्रोध की सन्तान होने का मतलब है - परमेश्वर के गुस्से का केन्द्र होना, उनके गुस्से के लायक होना।

2:4 "दया में धनी"- भजन 5:7; 51:1; मीका 7:18; रोमि. 2:4; 10:12; तीतुस 3:5; याकूब 5:11; 1 पतर. 1:3. पापी होने के कारण हम सभी को दण्ड मिलना चाहिए। केवल दया हमें बचा सकती है, माफ़ कर सकती है। किसी और बात में कोई आशा नहीं है।

"बड़े प्रेम"- यूहन्ना 3:16; रोमि. 5:8; 1 यूहन्ना 3:16; 4:8-9.

2:5 परमेश्वर ने विश्वासियों को आत्मिक रूप से ज़िन्दा किया है और मसीह के साथ एकता और संगति में लाए हैं। - यूहन्ना 1:12-13; 5:21,24; रोमि. 5:17; 6:4,8; कुल. 2:13; 1 पतर. 1:3,23; 1 यूहन्ना 3:9; 5:1,18. यह परमेश्वर का वरदान था - पद 9; रोमि. 6:23.

2:6 "हमें अपने साथ उठाकर"- रोमि. 6:3-5 यीशु मसीह सभी विश्वासियों के प्रतिनिधि हैं। क्योंकि वे "मसीह में" - हैं 1:3, उस से जुड़े हुए हैं, परमेश्वर का देखना ऐसा है कि जो कुछ यीशु के साथ हुआ वह मानों उनके साथ हुआ। उनकी नज़र में इस पृथ्वी पर विश्वासी पहले ही से जिलाए गए और स्वर्ग तक पहुँचाए गए हैं। तुलना करें कुल. 3:1-4.

मसीह के साथ बैठा दिया। 7ताकि आने वाले युगों में वह यीशु मसीह के द्वारा जो हमारे लिये दयालु हैं, उस असीम कृपा के बढ़ते हुए महान धन को दिखा सकें। 8इसी अनुग्रह (शर्तहीन कृपा) और विश्वास के द्वारा से तुम्हें मुक्ति मिली है। यह तुम्हारी किसी योग्यता से नहीं, यह मुक्ति परमेश्वर की तरफ़ से ईनाम है। 9यह कर्मों से नहीं मिलती है ताकि कोई घमण्ड न कर सके। 10 हम उनकी कारीगरी हैं और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही से हमारे लिए ठहराया है।

11इसलिए याद करो, कि पहले तुम शारीरिक रीति से खतना वालों (यहूदियों) के द्वारा गैरयहूदी और बिना "खतना वाले" कहलाते थे। 12उस समय तुम मसीह के बिना इस्राएल से बाहर और प्रतिज्ञा की वाचा के लिए अनजान और इस जीवन

2:7 यहाँ हमारे लिए परमेश्वर का महान उद्देश्य है। इसका मतलब क्या है, इसकी कल्पना कौन कर सकता है? परमेश्वर तभी सन्तुष्ट होंगे जब हमारी समझ से बाहर बड़ी आशीषों को वह हम पर उण्डेलेंगे। यह हमेशा तक वह करते रहेंगे।

"महान धन"- 1:7.

2:8-9 शुरू से आखिर तक मुक्ति अयोग्य लोगों के लिए एक इनाम थी। इस में मनुष्य की कोशिश से कुछ लेना-देना नहीं है। प्रे.काम 15:11; रोमि. 3:24; 4:4; 5:15; 6:23; 11:6; तीतुस 3:4-7.

"विश्वास...से"- यूहन्ना 1:12-13; 3:14-16,36; 5:24; 6:47; प्रे.काम 13:38; 16:31; रोमि. 1:16; 3:25,28; 4:16; 5:1; 10:9-13; गल. 2:16,21; 3:26.

"परमेश्वर...ईनाम"- यह मुक्ति और विश्वास की तरफ़ इशारा है, जिससे यह वरदान मिलता है। इसलिए हम घमण्ड नहीं कर सकते (प्रे.काम 18:11; फ़िलि. 1:29; 2 पतर. 1:1)। मनुष्य के घमण्ड की यहाँ कोई जगह नहीं है। रोमि. 3:27; 1 कुरि. 1:29-31. यदि कोई अपनी मुक्ति के लिए, खुद पर घमण्ड करे तो उसने मुक्ति को समझा ही नहीं। कामों से मुक्ति मिल ही नहीं सकती।

2:10 जैसे शारीरिक जन्म में उनका कोई हाथ नहीं वैसे ही आत्मिक जन्म की बात भी है, इसे परमेश्वर करते हैं। यह सृष्टिकर्ता का कार्य है - 2 कुरि. 5:17; याकूब 1:18; यूहन्ना 1:13. यहाँ एक कारण को देखें जो नए जीवन शुरू करने का है। हम भले कामों से मुक्ति नहीं पाते, लेकिन भला करने के लिए - तीतुस 2:14; मत्ती 5:16. परमेश्वर ने हमें भले कामों के लिए और भले कामों को हमारे लिए बनाया है। वह हमारे सामने ऐसे मौके लाते हैं। अच्छे काम मुक्ति के परिणाम हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो दिखाते हैं कि हम उनकी कारीगरी नहीं हैं (मत्ती 7:16-20; आदि)। जिस तरह से नए जीवन से नया फल उत्पन्न होता है, अच्छा पेड़ अच्छा फल पैदा करेगा। क्योंकि विश्वासी परमेश्वर के हाथ की कारीगरी है, निश्चय है कि वह अपना काम करेंगे और अधूरा नहीं छोड़ेंगे - फ़िलि. 1:6.

"कामों के लिए"- सन्दर्भ के आधार पर यूनानी में इसे "आगे बढ़ना" समझना चाहिये। "जीना", "आचार व्यवहार", "व्यस्त रहना" - आदि में अनुवाद किया जा सकता है।

2:11-22 पुराने समय में इस्त्राएल परमेश्वर का प्रिय था। उन्हें नियमशास्त्र, वाचा आदि प्राप्त हुयी -रोमि. 9:4-5. संसार के दूसरे देशों का इस में कोई हिस्सा नहीं था पद 12. वे बहुत दूर थे पद 13. इस्त्राएल और दूसरे देशों में दुश्मनी थी - पद 14. पौलुस कहता है, परमेश्वर ने सब कुछ बदल दिया है। मसीह में यहूदियों और दूसरे लोगों में कोई अन्तर नहीं था -पद 14-22. सभी विश्वासी मसीह में एक हैं। 1 कुरि. 12:12-13; गल. 3:28 से तुलना करें।

2:11 "गैरयहूदी"- यहूदियों को छोड़कर दूसरे अन्य लोग। यहूदी (खतना वाले) उन्हें बिना खतना वाले कहा करते थे। यह बेइज़्ज़ती का शब्द था-न्यायियों 14:3; 15:18; 1 शमू. 14:6; 17:26; 2 शमू. 1:20. खतने पर नोट्स उत्पत्ति 17:9-14 और गल. 5:6 में देखें।

2:12 जो लोग यीशु में नहीं है, उनकी हालत आज भी यही है। उनके पास सच्चा परमेश्वर नहीं, इसलिए मोक्ष की सही अपेक्षा भी नहीं है। (1 यूहन्ना 2:23; 5:11-12; गल. 4:8)।

में बिना परमेश्वर पिता के और आशाहीन थे। 13तुम जो एक समय बहुत दूर थे, अब यीशु मसीह और उन्हीं के खून के द्वारा पास लाए गए हो।

14यीशु के द्वारा ही मेल है, जिन्होंने दोनों (यहूदियों-गैरयहूदियों) को एक किया और हमारे बीच बँटवारा करने वाली दीवार को ढा दिया। 15जिस यहूदी निमयशास्त्र की व्यवस्था ने गैरयहूदियों को यहूदियों से अलग कर रखा था उसे यीशु ने अपनी मौत से खत्म कर डाला। इन दोनों के बीच मेल करके अपने में 'एक नया इन्सान' बनाया। 16यह भी कि यीशु क्रूस द्वारा परमेश्वर के साथ एक देह में सुलह (मेल) कराएँ, जिसकी वजह से उन्हों ने दुश्मनी को (यहूदियों और गैरयहूदियों के बीच) खत्म कर डाला। 17तुम गैरयहूदी जो दूर थे और यहूदी जो पास थे, उन सब को खुशी की खबर दी है। 18ताकि उन्हीं के द्वारा पिता तक पवित्र आत्मा से हम दोनों की पहुँच हो।

19इसलिए अब तुम विदेशी और अजनबी नहीं रहे, लेकिन पवित्र लोगों के संगी नागरिक हो और परमेश्वर पिता के घराने के हो। 20यीशु मसीह

2:13 "तुम" - का अर्थ है 'गैरयहूदी' उनकी दुष्टता और अविश्वास की वजह से वे लोग परमपिता से दूर थे। मसीह में आने से वे परमेश्वर के पास लाए गए। परमेश्वर की मौजूदगी के लिए एक रास्ता खुल गया - इब्रा. 10:19-22.

2:14 "मेल"- विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर यहूदियों के बीच मसीह एक सेतु हैं। यीशु में सब तरह की राष्ट्रीय सीमाएँ खतम हो जाती हैं और एकता है।

2:15 "अपनी मौत से"- यहूदियों और गैर यहूदियों के बीच की दुश्मनी को यीशु ने क्रूस पर खतम कर दिया। यीशु में देशों के बीच की सभी दिवारों को ढा दिया गया - पद 16. जिस वजह से यह दुश्मनी पैदा हुयी थी, उसको खतम करने से ऐसा किया गया। यह दुश्मनी मूसा के हाथों से मिलने वाले नियमशास्त्र से शुरू हुयी थी (रोमि. 7:4; 10:4)। सिर्फ़ मसीह में यह दुश्मनी खतम की गयी। यह प्रायः उन लोगों में पायी जाती है, जो मसीह से बाहर हैं।

"एक नया इन्सान"- इसका मतलब है यहूदी और गैर यहूदी मतों से निकले हुए लोग यीशु की देह का हिस्सा हैं और यीशु उनके प्रधान हैं। यह 'नया' इसलिए है क्योंकि इसके पहले ऐसा कुछ नहीं था और यह नए आत्मिक जीवन के साथ नयी सृष्टि है।

2:16 "मेल"- रोमि. 5:10; 2 कुरि. 5:18-19 के नोट्स देखें।

2:17 "दूर"- गैरयहूदी - पद 13.

"पास"- यहूदी।

"दी"- वह शान्ति के राजकुमार हैं जो मनुष्य और परमेश्वर के साथ और मनुष्य - मनुष्य के बीच मित्रता कराने आए; जो उन्हें स्वीकार करते हैं। यशा. 9:6; लूका 1:79; यूहन्ना 14:27; 16:33; प्रे.काम 10:36; 2 कुरि. 5:20. यीशु ने इस मेल का संदेश खुद दिया, उनके प्रेरितों ने दिया और अभी भी हर जगह अपने सेवकों से दिलवा रहे हैं।

2:18 देखें 3:12; रोमि. 5:2; इब्रा. 10:19-22. चाहे व्यक्ति यहूदी हो या गैर यहूदी, मसीह के द्वारा वे स्वर्गिक पिता तक पहुँचते हैं। यहाँ एक में तीन पर ध्यान दें - स्वर्गिक पिता तक हमारी पहुँच, पवित्र आत्मा की मदद से बेटे के माध्यम से होती है।

2:19 पद 12 का बिल्कुल उल्टा "संगी नागरिक" का अर्थ है एक शहर या देश से रिश्ता। मिलान करें। गल. 4:26; फ़िलि. 3:20; इब्रा. 11:16; 12:22.

"परमेश्वर पिता के घराने के"- परमेश्वर के पास परिवार है। यह उन लोगों से बना है जो पवित्र आत्मा से उनके परिवार में उत्पन्न हुए हैं - पद 5. आत्मिक रीति से मसीह में सभी विश्वासी भाई बहन हैं और उनके पिता, परमेश्वर पिता हैं - 2 कुरि. 6:17-18.

2:20-22मसीह में विश्वासी, परमेश्वर के घर हैं, परमेश्वर के भवन हैं। 1 कुरि. 3:16; 6:19; 1 पतर. 2:4-5 से तुलना करें। अलग-अलग शब्दों में किस तरह पौलुस विश्वासियों के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के बारे में बतलाता है। वे परमेश्वर की सन्तान हैं (1:5)

परमेश्वर की मीरास हैं (1:18)

जिस इमारत का मुख्य पत्थर हैं,
उन्हीं में प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं
की नींव पर तुम बनाए गये हो।
21 यीशु में पूरी इमारत बनी है और
उन्हीं में ही विश्वासी लोग जुड़कर
पवित्र भवन बनते जाते हैं। 22 तुम
भी एक साथ मिलकर परमेश्वर के
लिए एक ऐसा निवास स्थान बनाए
जाते हो, जहाँ परमेश्वर अपने आत्मा
द्वारा रहते हैं।

3 इसी कारणवश, मैं पौलुस तुम गैर
यहूदियों के लिए यीशु मसीह का कैदी
हूँ, 2 इसलिए कि तुम ने परमेश्वर की उस
कृपा के दिए जाने के सम्बन्ध में सुना
है, जो तुम्हारे लिए मुझे दी गयी। 3 मसीह
के रहस्य को कैसे उन्हों ने स्वर्गिक ज्ञान
(प्रकाश) के द्वारा मुझे बतलाया, (जैसा मैंने
पहले थो में लिखा था)। 4 ताकि इस चिट्ठी
को पढ़ने पर, इस छिपी बात के विषय
में मेरी समझ को तुम जान पाओ। 5 जैसा

परमेश्वर की कारीगरी (2:10)

परमेश्वर के लोग, परमेश्वर के स्वर्ग के नागरिक और परमेश्वर का घराना (2:19)

परमेश्वर का भवन (2:21)

परमेश्वर का भवन एक ऐसा स्थान है जहाँ उपासना की जाती है और बलिदान चढ़ाए जाते हैं। इसलिए परमेश्वर के लोगों से परमेश्वर का जीवित भवन बनता है - रोमि. 12:1; इब्रा. 13:15-16.

"इमारत का मुख्य पत्थर"- 1 पतर. 2:6; यशा. 28:16. घर बनाने वाले कोने के पत्थर को पहले काटते हैं। यह इमारत का सब से ज़रूरी हिस्सा होता था। इसके द्वारा दिवारों को एक सीधी लकीर मिलती थी, जिससे दो दीवारें जुड़ती थीं इसी से पूरी इमारत को मज़बूती और खूबसूरती मिलती थी।

2:20 "प्रेरितों"- 1:1; मत्ती 10:2.

"भविष्यद्वक्ताओं"-शायद यह पुराने नियम के नबियों की तरफ़ या न्यू टेस्टामेन्ट के नबियों की तरफ़ इशारा हो सकता है (3:5; 4:11; 1 कुरि. 12:28) या दोनों की तरफ़।

2:21 "बनते जाते"- परमेश्वर की इमारत पूरी बनी नहीं है। जैसे-जैसे नए लोग आते जा रहे हैं, यह बढ़ती जा रही है। इमारत मसीह में एक बनी है और बढ़ती जाती है। विश्वासी जीवित पत्थर की तरह हैं, आत्मिक भवन में बने हुए हैं - पत. 2:5. यह सोचना भी नहीं चाहिए, कि हमारे चूक जाने से, वह हमें निकाल देंगे और गलती मानकर छोड़ देने से वापस जोड़ देंगे। ऐसा वह बार- बार नहीं करते रहते हैं। परमेश्वर एक अच्छी योजना बनाने वाले और इमारती इंजीनियर हैं। पत्थर को वे स्थायी रूप से लगाते हैं। सृष्टि की नींव रखे जाने से पहले उन्हें मालूम था कि कौन से पत्थर को कहाँ लगाया जाए - 1:4-5. इसलिए उन्हें लगाने के बाद निकालने की बात ही नहीं है।

2:22 "तुम भी"- तुम गैर यहूदी विश्वासी।

"निवास स्थान"- निर्ग. 25:8; प्रका. 21:3 के नोट्स देखें। मसीह यीशु के विश्वासी इस पृथ्वी पर परमेश्वर के मात्र एक भवन के हिस्सा हैं। मनुष्य के हाथों से बनाए गए किसी भवन में वह नहीं रहते हैं - प्रे.काम 17:24-25.

3:1 "इसी कारणवश"- 2:20-22.

"कैदी"- इस चिट्ठी को लिखते समय पौलुस जेल में था। मसीह के लिए निष्ठा और गैर यहूदियों में किए गए काम की वजह से वह कारावास में था। (प्रेरित 21,22)। इसलिए वह अपने आप को यीशु का कैदी कहता है। वह यह भी जानता था कि बिना मसीह की इच्छा के लोग उसे जेल में नहीं डाल सकते थे।

3:2 "तुम्हारे...गयी"- पौलुस गैरयहूदियों के लिए प्रेरित था - गल. 2:7-9; प्रे.काम 9:15; 22:21.

3:3-4 "रहस्य"- मत्ती 13:11; रोमि. 11:25; 16:25; 1 कुरि. 15:51 के नोट्स देखें। पद 6 में वह बतलाता है कि कौन से रहस्य के बारे में कह रहा है।

"स्वर्गिक ज्ञान"- गल. 1:11-12.

"संक्षेप में"- शायद पहले दो अध्यायों में उसने जो कुछ कहा उसके बारे में कह रहा है जैसे कि 1:9; 2:19.

3:5 रोमि. 16:25-26; कुल. 1:26-27 । इन प्रेरितों और नबियों की जो शिक्षा न्यू टैस्टामॅन्ट है, वह मनुष्यों की बनायी हुयी नहीं लेकिन परमेश्वर की तरफ़ से है।

अभी आत्मा द्वारा उनके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है, पहले के युगों में यह भेद मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया गया था। 6वह यह कि यहूदियों के साथ एक ही देह में गैर यहूदी, मीरास, सदस्यता और सुसमाचार द्वारा उन्हीं वायदों में हिस्सा पाएँ। 7जिस सुसमाचार का मैं सेवक बना, उस परमेश्वर पिता की सामर्थ के असर(कृपा के ईनाम) के अनुसार, जो मुझे उनकी शक्ति के प्रभावशाली रूप से कार्य करने की वजह से दिया गया। 8मैं सभी पवित्र लोगों में छोटे से भी छोटा हूँ, मुझे यह कृपा मिली कि मैं गैरयहूदियों को मसीह की अथाह सम्पति के बारे में बता सकूँ। 9और सभी को यह दिखा दूँ कि दुनिया की शुरूआत से सृजनहार में छुपी सच्चाई का महत्व (खासियत) क्या है, जिन्होंने यीशु मसीह के द्वारा सब कुछ बनाया था। 10ताकि अभी परमेश्वर के तमाम ज्ञान को मण्डली (चर्च) के द्वारा आकाश (स्वर्गिक स्थानों) में प्रधानों (शासकों) और अधिकारियों को बताया जा सके। 11जिसे उन्हों ने हमारे स्वामी यीशु मसीह में अपनी अनन्तकालिक मनसा (इरादे) को पूरा करने के लिए हमें ठहराया था। 12जिसमें उन पर विश्वास करने से, हमें यह साहस और भरोसा हुआ कि हमारी पहुँच परमेश्वर तक हो। 13इसलिए मैं तुम

3:6 2:11-22 में उसने जो कहा उसका यहाँ निचोड़ बतलाता है। वह मसीह के सुससमाचार पर भरोसा रखने के तीन फ़ायदे बताता है। वे लोग यहूदी विश्वासियों के साथ उत्तराधिकारी, एक सच्ची मण्डली के सदस्य, मसीह की देह और याहवे परमेश्वर की प्रतिज्ञा के भागीदार हैं। यहाँ "वायदों" मुक्ति या पवित्र आत्मा की तरफ़ इशारा हो सकता है (1:13)

3:7-8 ध्यान दें, पौलुस सुससमाचार में अपनी सेवा को क्या समझता था। उसके लिए यह एक अद्‌भुत इनाम था। यदि मण्डली में सभी का यही नज़रिया हो, तो कितना बड़ा बदलाव आएगा।

"शक्ति"- 2 कुरि. 3:5-6; कुल. 1:29; प्रे. काम 1:8. सिर्फ़ परमेश्वरीय शक्ति किसी को सुससमाचार का अच्छा सेवक बना सकती है।

3:8 "छोटे से भी छोटा"- यहाँ अपने बारे में पौलुस का विचार देखें। दुख की बात यह है कि कुछ लोग अपने को सर्वोत्तम विश्वासी समझते हैं।

"अथाह सम्पति"- पद 16; 1:7,18; 2:7. कुछ लोग सुसमाचार को यों ही समझते हैं। (1 कुरि. 1:18,23 से तुलना करें) शायद ही वे यह जानते हैं कि बाईबल ऐसे आत्मिक धन की बात करती है जो कोई भी समझ नहीं सकता है। मसीह की इस दौलत के बारे में बताने से बढ़कर और कोई बात नहीं हो सकती है।

3:9 पुराने समयों में परमेश्वर ने दूसरी सच्चाइयों को लोगों पर ज़ाहिर किया, लेकिन यह सच्चाई उन को नहीं बतायी। लोगों को यह बतलाने के लिए उन्हों ने पौलुस पर यह प्रगट किया।

"सृजनहार"-पौलुस चाहता था कि लोग यह जानें कि वह किसी देवता-देवी के बारे में नहीं कह रहा था, लेकिन सृष्टिकर्ता के बारे में (उत्पत्ति 1:1)।

3:10 परमेश्वर मण्डली के द्वारा सिखाते हैं (1:22-23)। यहूदियों और गैर यहूदियों को मसीह में एक देह बनाया। ऐसा मसीह की मौत से ही हो सका - ये सब बातें परमेश्वर की महान बुद्धि का सबूत हैं।

"प्रधानों...अधिकारियों"- आत्मिक अनदेखे संसार में दुष्ट और भली शक्तियाँ हैं (6:12; कुल. 1:16; 1 पतर. 3:22; दानि. 10:12-13)। यहाँ शायद उसका इशारा भले या अच्छे अधिकारियों की तरफ़ है। मण्डली के साथ जो परमेश्वर के तरीके हैं, उनके विषय विश्वासियों को आश्चर्य और प्रशंसा से भर जाना चाहिए।

3:11 "अनन्तकालिक मनसा"- मण्डली (चर्च) के बनाए जाने और उन्नति के सम्बन्ध में जो कुछ पृथ्वी पर हो रहा है, वह पुरानी बड़ी योजना के अनुसार है - 1:11.

3:12 2:18 देखें.

"उन पर"- यूहन्ना 14:6.

"विश्वास करने से"- रोमि. 5:2.

"साहस और भरोसा"- इब्रा. 4:16; 10:19-22.

से बिनती करता हूँ, कि तुम्हारे जो दुख मुझे हैं, उनके कारण हिम्मत मत हारो, क्योंकि यही तुम्हारे लिए आदर की बातहै।

14इसलिए मैं उस पिता के सामने अपने घुटने टेकता हूँ। 15जिनके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के हर एक घराने का नाम रखा जाता है (या अस्तित्व है), 16कि उनकी महिमा के धन के अनुसार वह ऐसा होने दें, कि तुम भीतरी जीवन में उनकी आत्मा की मदद से मज़बूत किए जाओ। 17और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे दिलों (जीवनों) में बसें, 18ताकि परमेश्वरीय प्यार में गहराई

3:13 "दुख"- पद। 2 कुरि. 11:23-29 से तुलना करें, जहाँ वह उन्हीं के लिए दुःख उठा रहा था। 2 कुरि. 1:6; 2 तीमु. 2:9-10.

"हिम्मत मत हारो"- उनके यह सोचने की गुंजाइश थी कि पौलुस यदि परमेश्वर का सेवक था, तो फिर दुःख तकलीफ़ क्यों सह रहा था। या फिर यह कि यदि वह सताव में होकर जा रहा था तो उन्हें भी इस हालत से होकर गुज़रना पडेगा। किसी भी हालत में पौलुस नहीं चाहता था कि वे लोग हिम्मत हार जाएँ। हालाँकि अपनी तकलीफ़ों के लिए वह मसीह में हमेशा खुश रहता था - कुल. 1:24; 2 कुरि. 12:10; रोमि. 5:3.

"तुम्हारे...बात"- पौलुस के दुख परमेश्वर के प्यार (और उसके प्यार) जो उनके लिए या के सबूत थे। मसीह के लिए दुख उठाया जाना मसीह और उसकी "देह" की बड़ाई के लिए था।

3:14-15 जिस विचार पर पहले पद में पौलुस रूक गया था, वहीं से वह फिर से शुरू करता है।

"पिता"- मत्ती 5:16 पर नोट्स देखें। परमेश्वर का परिवार विश्वासियों से मिल कर बना है (2:19)। परमेश्वर के पास पिता का सच्चा स्वभाव और हृदय है।

3:16 "महिमा के धन"- पद 8; 1:7,18; 2:7; फ़िलि. 4:19. अपनी प्रार्थनाओं में जो 1:17-19 में है, पौलुस ने यह दिलचस्पी दिखायी कि उन्हें बुद्धि मिले और परमेश्वर की बड़ी शक्ति को वे जानें। यहाँ वह दुआ करता है कि बल से मज़बूत किए जाएँ और मसीह के महान प्यार को जानें।

"उनकी आत्मा"- विश्वासियों में रहने के लिए पिता ने पवित्र आत्मा दिया है (1:13) उनके लिए वह भीतरी आत्मिक बल है।

3:17 "विश्वास के द्वारा"- सच्चा मसीही जीवन शुरू से आखिर तक भरोसे का जीवन है। 2:8; रोमि. 1:17; कुल. 2:6 जब तक हम यीशु पर भरोसा रखेंगे, तब तक यीशु हमारे मन में इज़्ज़त पाएँगे। अगर हम ने उन पर मुक्ति के लिए भरोसा किया है तो यह भरोसा रखें कि वह हमें पूरी तरह से भर कर रखें। इसलिए कि उन्हों ने ज़ाहिर किया है कि वह ऐसा करना चाहते हैं, हम क्यों उन पर भरोसा न करें?

"बसें"- पौलुस विश्वासियों को लिख रहा था। सभी विश्वासियों में मसीह हैं। रोमि. 8:9-10; 2 कुरि. 13:5; कुल. 2:2-7. पद 19 के नोट्स देखिए। यहाँ पौलुस की बिनती यह है कि उन्हें और अधिक मिले। वह चाहता था कि यीशु अपना जीवन उन में और उनके द्वारा जीएँ (गल. 2:20) मसीह उन में निवास करें (यूहन्ना 14:23)। यह मुमकिन नहीं है कि मसीह हम में हों हमारे लिए हों और हम उन्हें सिर्फ़ मेहमान कि तरह ही जानें। मसीह चाहते हैं, कि हमारे पूरे जीवन में वास करें- वह चाहते हैं कि प्यार से हम आज्ञा मानने और सहभागिता रखने के लिए अपने आप को सौंपे । वह हमारे, मालिक होने के साथ हमारे सोचने, योजना बनाने और करने में भी हमारे मालिक बने रहना चाहते हैं।

हमें अपने घरों (हृदयों) का मालिक नहीं बनना चाहिए, बल्कि जो उसमें रहते हैं, उन्हें। वह सर्वश्रेष्ठ राजा हैं और अपने महल में हमारे हृदयों में सिंहासन लगा कर बैठना चाहते हैं। ऐसी तभी होगा, अगर परमेश्वर का आत्मा हमें अपने बल से मज़बूत करे। (पद 16)। अगर ऐसा नहीं होता है तो हम ऐसा जीवन जियेंगे, जिसमें यीशु कहीं कोने में पड़े रहेंगे।

3:18 मसीह के प्यार का ज्ञान विश्वासियों में प्यार को प्रेरित करता है (1 यूहन्ना 3:16; 4:9-12,19)। हमें उनके प्रेम की महानता को जानना है ताकि प्यार में जड़ पकड़ते हुए उन से इस तरह का प्यार करें, जैसा किए जाने की ज़रूरत है। मसीह का प्यार सारी ऊँचाई, गहराई और चौड़ाई से कहीं बढ़कर है (रोमि. 11:33)।

"प्यार"- यीशु और एक विश्वासी के बीच यह एक बहुत खास रिश्ता है (यूहन्ना 14:23-24; 1 कुरि. 13:13)। प्यार एक अच्छी ज़मीन है जहाँ विश्वासियों को मज़बूती से जड़ पकड़ते हुए बढ़ते जाना है।

से जड़ पकड़ते जाओ और सभी पवित्र लोगों के साथ समझ सको, कि इस प्यार की चौड़ाई, लम्बाई, गहराई और ऊँचाई क्या है। 19यह भी कि मसीह के उस प्यार को जान सको जो समझ के बाहर है, ताकि तुम परमेश्वर पिता की सारी भरपूरी से भर जाओ।

20अब जो ऐसे सामर्थी हैं कि हमारे जीवन में काम करने वाली शक्ति के द्वारा हमारे माँगने या सोचने से कहीं अधिक करने के योग्य हैं, 21पीढ़ी से पीढ़ी तक परमेश्वर का सम्मान चर्च में और मसीह यीशु में होता रहे।

4 इसलिए मैं मसीह यीशु का कैदी तुम से यह कहता हूँ, कि अपनी बुलाहट के लायक जीवन जियो। 2पूरी दीनता, नम्रता और धीरज के साथ प्यार में एक

3:19 हम उस प्यार को कैसे जान सकते हैं, जो असीमित है, अनन्त को कैसे जाना जा सकता है? परमेश्वर का आत्मा हमें इसका भीतरी ज्ञान और अनुभव देता है। समुद्र को जानने के लिए इसका अध्ययन काफ़ी नहीं है लेकिन इस में तैरकर भीतर जाना जरूरी है। परमेश्वर स्वयं अनन्त और असीमित हैं। मनुष्य पूरी तरह से नहीं उन्हें समझ सकता। विश्वासी उन्हें जानते हैं - मत्ती 11:27; इब्रा. 8:11; 1 यूहन्ना 5:20. ऐसा ही मसीह का प्यार है।

"भरपूरी से भर जाओ"- मसीह से भरने का मतलब है, परमेश्वर और उनके आत्मा से भरा जाना। यह सच्चाई कि एक ही समय में सभी जगह के विश्वासियों के भीतर यीशु रहते हैं, इस बात का सबूत है कि यीशु परमेश्वर हैं। सिर्फ़ परमेश्वर ही एक समय में सभी जगह पर रह सकते हैं। फ़िलि. 2:6; लूका 2:11 में यीशु के परमेश्वरत्व पर देखें।

प्रभु की भरपूरी के लिए इस से बढ़कर और कौन सी प्रार्थना हो सकती है? लेकिन क्या हमारे छोटे हृदय परमेश्वर की सारी भरपूरी को अपने में रख सकते हैं? क्या एक प्याले में समुद्र समा सकता है? यह समुद्र के पानी से ऊपर तक भरा रह सकता है। इसी तरह विश्वासी का हृदय भी है। विश्वासियों का यही लक्ष्य होना चाहिए।

3:20 पद 16-19 की अद्‌भुत बातें हमारे लिए संभव हैं, निश्चित रीति से। अगर संभव नहीं होतीं तो वह हमारे सामने रखते ही नहीं कि हम उन्हें चाहते। परमेश्वर ये हमारे जीवन में कर सकते हैं, हमारी कल्पना से बढ़कर भी। तो फिर सभी विश्वासियों का यह अनुभव क्यों नहीं है? इसलिए कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम इन्हें चाहें अपना समर्पण करें, सब बातों में उनकी मानें, भरोसा रखें और करते रहें। (पद 17; यूहन्ना 14:21; रोमि. 12:1-2; यिर्म. 29:13; यशा. 57:15)

3:21 "परमेश्वर का सम्मान"- 1:6,12,14. क्योंकि परमेश्वर ही विश्वासियों में और उनके लिए सब कुछ करते हैं यह वाजिब है कि सारा सम्मान उन्हीं को मिले।

4:1 पिछले अध्यायों में पौलुस ने यह दिखाया कि मसीह में हमें क्या होने के लिए बुलाया गया है-स्वर्गिक पिता के बेटे-बेटियाँ,उनकी दौलत, मसीह की देह, परमेश्वर का भवन, मसीह का घर। पौलुस चाहता है कि हम इस बुलाहट के योग्य जीवन जीएँ। हमें ऐसा बर्ताव ही करना चाहिए जैसा परमेश्वर के विशेष बच्चों को सोहता है। यह महान सत्य कि 'हम मसीह में हैं क्या', याद रखना चाहिए और उसके प्रकाश में जीना चाहिए।

"लायक जीवन जियो"- योग्य तरीके से जीना और बर्ताव करना- कुल. 1:10; 1 थिस्स. 2:12. 2:10 में चलने पर जो नोट्स हैं, उन्हें देखें। एक योग्य जीवन वह है जिसमें परमेश्वर और लोगों के लिए प्यार है। एक प्रेम रहित व्यक्ति चाहे कितना भी सही हो, नैतिक हो, त्यागी और विश्वासयोग्य हो, परमेश्वरीय बुलाहट के हिसाब से नहीं जी रहा है।

4:2 "दीनता, नम्रता"- मत्ती 5:3,5; 11:29; कुल. 3:12; 1 पतर. 5:5-6.

"धीरज"- स्वर्गिक धीरज के एक दायरे के विषय में पौलुस बतलाता है। यह है प्यार से एक दूसरे को सहना। यदि हमारे पास मसीह का प्यार नहीं है तो एक दूसरे के साथ रहने पर होने वाली समस्याओं को सहा नहीं जा सकता। (1 कुरि. 13:4)।

दूसरे की सहो। 3मेल के बन्धन में पवित्र
आत्मा की एकता को बनाए रखने की
कोशिश करो। 4देह एक ही है, एक आत्मा
है, ठीक उसी तरह तुम अपनी बुलाहट की
एक आशा में बुलाए गये हो। 5एक ही प्रभु,
एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है,
6एक परमेश्वर जो सब के पिता हैं, जो
सब के ऊपर (सब से बड़े) सब के बीच
और सब में हैं।

7लेकिन मसीह ने अपनी उदारता की
माप से हम में से हर एक को शर्तहीन कृपा
दी है (या अनुग्रह दिया है)। 8इसलिए वह
कहता हैः "जब वह ऊँचाई (स्वर्ग) पर
चढ़े उन्हों ने गुलामी को बाँधने में अगुवाई
की और लोगों को ईनाम (वरदान) दिए"

9"उनके चढ़ने" का क्या मतलब है?
यह कि, वह पहले पृथ्वी के निचले भागों
में भी उतरे? 10वह जो नीचे उतरे, वही
हैं जो आसमान से ऊपर चले गए, ताकि
सब कुछ में समा जाएँ। 11वह यीशु ही थे
जिन्होंने अलग-अलग लोगों को प्रेरित,
भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार देने वाले, पास्टर

4:3 "पवित्र आत्मा की एकता"- सभी विश्वासियों के मसीह में एक देह बनाने के लिए परमेश्वर के आत्मा ने इस एकता को बनाया है (1 कुरि. 12:12-13)। यह संस्था की एकता नहीं है, विश्वासी इसे पैदा नहीं कर सकते (यूहन्ना 17:20-23)। लेकिन इस एकता में विश्वासी लोग एक दूसरे के साथ शान्ति से रह सकते हैं। यही पौलुस करने के लिए भी कहता है (रोमि. 12:16,18; 2 कुरि. 13:11; 1 पतर. 3:11)। यह करने के लिए कोशिश की ज़रूरत है। कोशिश अपने आप नहीं होती है। अगले पदों में पौलुस यह दिखाता है कि एकता का आधार क्या है। यह भी कि इस से फ़ायदे क्या हैं।

4:4 "देह"- 1:22-23; 3:6.

"आत्मा"- 1:13; 2:22.

"आशा"- 1:18.

4:5 "प्रभु"- 1:2; 1 कुरि. 8:6 (लूका 2:11 में नोट्स देखें)।

"विश्वास"- 1:13,15; 2:8.

"बपतिस्मा"- इफ़िसियों में सिर्फ़ इसी जगह बपतिस्मे के बारे में है। वह नहीं कहता कि पानी का या पवित्रआत्मा का। ऐसा लगता है कि वह पानी के बपतिस्मे की बात कह रहा है। बपतिस्मा अपराध, क्षमा और मसीह के साथ एक होने को दिखाता है। पानी के बपतिस्मे पर मत्ती 3:2; मरकुस 16:16; प्रे.काम 2:38; 1 कुरि. 14:18 में देखा जा सकता है। आत्मा के बपतिस्मे के बारे में प्रे.काम 1:5; 1 कुरि. 12:13; रोमि. 6:3-4 के नोट्स भी देखें।

4:6 "परमेश्वर"- 1:2-3,17; 3:14.

"सब में"- सभी विश्वासियों में (2:22)। याहवे परमेश्वर सभी लोगों में नहीं हैं (2:12; 4:18)। शब्द "एक" - पद 4-6 में सात बार आता है। क्योंकि इन सात बातों में सभी विश्वास करने वाले एक हैं, 'शान्ति के बन्धन' में उन्हें (पद 3) एकता बनाए रखनी चाहिए । इन पदों में त्रिएकत्व - एक आत्मा, एक स्वामी, एक पिता, तीन व्यक्ति, एक परमेश्वर पर ध्यान दें। (यहाँ उसने सात बातें बतायी हैं)। दूसरी बातों में वे एक दूसरे से भिन्न हैं। यह बात उनकी आत्मिक योग्यताओं और काम के बारे में सच है।

4:7 रोमि. 12:4-8; 1 कुरि. 12:4-11.

4:8 भजन 68:18.

4:9 "पृथ्वी के निचले भागों"- शायद यहाँ उसका इशारा मरे हुओं के अनदेखे संसार की तरफ़ है (रोमि. 10:7)।

4:10 "ऊपर चले गए"- 1:20-21; प्रे.काम 2:31-35.

"समा जाएँ"- यिर्म. 23:24 देखिए जो दिखाता है, कि याहवे परमेश्वर ऐसा करते हैं। बाईबल में यह इस सच्चाई का भी एक सबूत है कि याहवे मसीह में होकर आए थे। लूका 2:11 में नोट और पद देखें।

4:11 तुलना करें 1 कुरि. 12:28.

"प्रेरित"- मत्ती 10:2.

"भविष्यद्वक्ता"- 2:20; 3:5. उत्पत्ति 20:7 में और 1 कुरि. 12:10,28 में नोट्स देखें।

"सुसमाचार देने वाले"- जिन्हें इस का खास वरदान है कि वे यीशु के संदेश को समझाएँ।

और शिक्षक ठहराकर दे दिया। 12ताकि पवित्र लोग सेवा के लिए तैयार किए जाएँ, और मसीह की देह (मण्डली) उन्नति करती जाए। 13जब तक हम विश्वास की एकता, परमेश्वर पिता के बेटे के पूर्ण ज्ञान, बुद्धिमान व्यक्ति बनने और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ। 14ताकि हम बच्चों के समान इधर से उधर तमाम सिद्धान्तों के झोकों से लोगों की चालाकी, धूर्तता, और धोखाधड़ी से हिलाए डुलाए न जाएँ। 15लेकिन प्यार के साथ सच बोलते हुए मसीह के समान जो चर्च (मण्डली) के प्रधान हैं, हर तरह से और अधिक बढ़ते जाएँ, 16जिस से सारी देह, प्रत्येक जोड़ में एक साथ बंधकर बढ़ती जाती है। जैसे हर एक भाग अपना-अपना काम (भूमिका को) करता है, देह प्रेम में उन्नति करती जाती है।

17मैं यह मसीह में ज़ोर देकर इसलिए

"पास्टर और शिक्षक"-ये दोनों शब्द एक ही तरह के लोगों की तरफ़ इशारा हैं। सभी पास्टरों के पास शिक्षा का वरदान होना चाहिए। यदि परमेश्वर ने यह काम उन्हें दिया है, तो ज़रूरी है कि इसे पूरा करने के लिए ज़रूरी योग्यताओं के लिए वे परमेश्वर की तरफ़ अपनी नज़र करें।

4:12 लोगों को व्यक्तिगत रीति से आत्मिक वरदान देने और उन लोगों को कलीसिया (मण्डली) के लिए देने का यही कारण है। तुलना करें 1 कुरि. 12:7.

"सेवा के लिए"-मसीह में मज़बूत करने के लिए यहाँ यीशु के लोग हैं जिन्हें दूसरों के लिए सेवा करनी है। (गल. 5:13)। यह पास्टरों और टीचरों और खुशी की खबर देने वालों की ज़िम्मेदारी है कि इसे करने के लिए वे उन्हें तैयार करें। जिसे पूरे समय की सेवा कहा जाता है उसमें हर एक विश्वासी नहीं है। लेकिन हर विश्वासी को हर समय तैयार रहना चाहिए कि साथी विश्वासियों की सेवा करें।

"पवित्र...जाएँ"- यूनानी भाषा के जिस शब्द का अनुवाद यहाँ किया गया है, वह वही नहीं है जो मत्ती 5:48 या इब्रा. 6:1 में है। यहाँ मतलब है 'तैयार करना' 'फ़िट बनाना' या वह प्रकिया जो पूरे होने तक ले जाता है।

"देह...जाए"- रोमि. 14:19; 1 कुरि. 14:12,26; 1 थिस्स. 5:11. हर एक यीशु के विश्वासी का यही लक्ष्य होना चाहिए। हमेशा उसे कोशिश करनी चाहिए कि दूसरों को कैसे मज़बूत कर सके। आप ही सोचिए अगर इस बात को हर एक अमल में लाए।

4:13-15 परमेश्वर की चाह यही है कि हम सभी आत्मिकता में बढ़ते जाएँ। तुलना करें 1 कुरि. 3:1-3; इब्रा. 5:11—6:1; 1 पतर. 2:1-3; 2 पतर. 3:18. यहाँ पद 13 में यह समझदारी यीशु मसीह के ज्ञान और विश्वास की एकता है। पद 15 में यही समझदारी सारी आत्मिक बातों के बारे में है। हमें मसीह में और उनके कद तक तब तक बढ़ते रहना चाहिए, जब तक उनकी भरपूरी को हासिल न कर लें। सम्पूर्ण मण्डली के लिए यही परमेश्वर की कामना है। वह इसे पा भी लेंगे। व्यक्तिगत तरीके से हम सभी को यह प्यार में सच बोलने से प्राप्त करना है। (पद 15) यह आत्मिक विकास और उन्नति के लिए बहुत ज़रूरी है। यदि हम उन्नति करना चाहते है, तो बाईबल में परमेश्वर के बताए गए सत्य को एक दूसरे के साथ बाँटना चाहिए। (2,25; 6:14; भजन 15:2; 25:5; 31:5; 51:6; नीति. 6:16-17; 12:22; 1 कुरि. 5:8; कुल. 3:9; 1 यूहन्ना 2:21)। सच्चाई ही वह जमीन है, जिसमें मण्डली को बोया गया है। सच्चाई ही वह खाना है, हवा है जिसकी इसे ज़रूरत है। जब सच्चाई खो जाती है तो सब कुछ खो जाता है। ज़रूरी है कि हम सच्चाई से प्यार करें और सच्चाई बोलना सीखें। यह सब कुछ प्यार भरे दिल से होना चाहिए। जिन बातों को पद 14 में परमेश्वर गलत ठहराते हैं, उन पर चलने वालों के बिल्कुल यह विरोध में है।

4:14 रोमि. 16:17-18; 2 कुरि. 11:13-15; कुल. 2:4; 1 तीमु. 4:2.

"हिलाए डुलाए"- ये उन लोगों के साथ होता है जो परमेश्वर के वचन समझते नहीं और मसीह में बढ़ते नहीं। तुलना करें गल. 1:6-7; 3:1.

4:16 "जोड़ में एक साथ बंधकर"-एक शारीरिक देह तमाम तन्तुओं, मांसपेशियों और हड्डियों आदि से बनी रहती है। परमेश्वर के आत्मा से आत्मिक बन्धन से बन्धकर मसीह की देह (मण्डली) बनी है। (1 कुरि. 12:12-27)। देह के हर एक सदस्य की ज़िम्मेदारी यह है कि देखे कि सभी सदस्य प्यार से एक दूसरे को मज़बूत करते हैं।

ऐलान करता हूँ: कि तुम दूसरों (गैर यहूदियों) की तरह बेकार के सोच विचार का जीवन न बिताओ। 18क्योंकि उस नासमझी की वजह से जो उन में है और मन की सख्ती की वजह से उनकी बुद्धि अंधेरी हो गयी है और वे परमेश्वर की ज़िन्दगी (जीवन) से अलगहो गए हैं। 19वे हर तरह से सुन्न हो गए हैं, क्योंकि उन्हों ने अपने आप को हर तरह की गदंगी और (लगातार लालच) और कामुकता को सुपुर्द कर दिया है।

20तुम ने मसीह से ऐसा करना नहीं सीखा है, 21इसलिए कि उनके (यीशु के) बारे में तुम ने सब कुछ सुना है और उस सत्य को जो यीशु में है जान लिया है, 22अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो जो भरमाने वाली अभिलाषाओं (धोखे की चाह) की वजह से भ्रष्ट है 23और अपने मन की आत्मा में (विचारों और रवैय्यों में) नए होते जाओ। 24नए मनुष्यत्व (नयी इन्सानियत) को

4:17 "बेकार के सोच विचार"-रोमि. 1:21; प्रे. काम 14:15; 1 पतर. 1:18. बहुत से लोग यह घमण्ड करते हैं कि वे बहस कर के दूसरों को हरा सकते है। उनका सोचना, खासकर धार्मिक और दार्शनिक सोच-विचार परमेश्वर की निगाहों में खाली और बेकार है।

"जीवन"- 4:1 यदि हम दुनिया के लोगों की तरह ही जीवन जी रहे हैं, तो हम मसीह को खुश करने वाला जीवन नहीं जी रहे हैं (2:2-3)। इसलिए कि दूसरे लोग सांसारिक जीवन जी रहे हैं, हमें नहीं जीना चाहिए।

4:18 चार चरणों में पौलुस दुनिया के उन लोगों की हालत को बतलाता है जो मसीह बिना हैं।

"नासमझी"-निस्संदेह हालांकि वे बहुत कुछ जानते हैं? वे एक सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते हैं। यूहन्ना 15:21; 16:3; रोमि. 1:22; 1 कुरि. 1:21; 1 यूहन्ना 2:4.

"बुद्धि अंधेरी"- 6:12; भजन 82:5; यूहन्ना 1:5; 3:19; प्रे.काम 26:18; 2 कुरि. 4:4; 1 पतर. 2:9; 1 यूहन्ना 2:11.

"बुद्धि अंधेरी"- मसीह के बिना यह हालत सभी लोगों की है । 2 कुरि. 4:4 वे तुलना करें। यह तो दुख की बात होती है अगर किसी को दिखता नहीं है। उस से ज़्यादा दुख की बात तब है जब आत्मिक बातों के बारे में अन्धापन है जब मसीह की सच्चाई दिखती नहीं। यहाँ यूनानी शब्द 'अन्धापन' का मतलब "कठोरता" - और 'असंवेदनशीलता' या 'सुन्न होना' भी हो सकता है।

"परमेश्वर...अलग"- परमेश्वर के जीवन से 2:12; यूहन्ना 14:17; रोमि. 8:9,16; यहूदा 19.

4:19 2:3 देखें। यह कठोर मन, अन्धेपन का परिणाम है - लोग नैतिक और क्या जायज है, यह भावनारहित हो जाते हैं। पाप फिर पाप नहीं लगता और वे उस पाप से इन्कार करते हैं। अगला कदम यह है कि लोग सेक्स सम्बधित और दूसरी गंदी बातों में लिप्त हो जाते हैं। रोमि. 1:24-32 सत्य और भयानक वर्णन है।

"कामुकता"- शारीरिक अभिलाषा कभी भी सन्तुष्ट नहीं की जा सकती है। जितना लोग इसे पूरा करते हैं, उतनी ही यह बढ़ती जाती है।

4:20-21 कुछ मसीही लोग भी पद 19 का सा जीवन जीते हैं। जो कुछ भी उन्हों ने मसीह के बारे में सीखा है, उसके विपरीत जीवन जीते हैं।

4:21 "सत्य...है"-यूहन्ना 1:17; 14:6. जो कुछ पद 17-19 में लिखा है।

4:22 "पुराने मनुष्यत्व" - रोमि. 6:6 से तुलना करें। मसीह के पहले पुराना स्वभाव और मुक्ति से पहले हम जो कुछ थे। मतलब कि हमारा पुराना जीने का तरीका (2:1-3) यह पुराना जीवन मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है और विश्वासियों ने इसे उतार दिया है (कुल. 3:9)। पौलुस क्यों कहता है कि वे उसे उतार दें? इसलिए कि सोचने और करने के पुराने तरीके हम से चिपके रहना माँगते हैं और हमें उन से निपटना चाहिए।

4:23 रोमि. 12:2 - इसके कारण हमारे जीवन में बदलाव आएगा।

4:24 "नई इन्सानियत"- यह मसीह में रहने का नया तरीका है। पृथ्वी पर रहते हुए उसने दिखाया कि कैसे बर्ताव करें। यीशु ने ही हमारे भीतर नए आत्मिक स्वभाव को पैदा किया, जिससे हम पवित्र और खरा जीवन बिताएँ (2:5,10; रोमि. 8:4)।

पहन लो, जो परमेश्वर की समानता में-सच्चे
खरेपन और पवित्रता में बनाया गया है।
25इसलिए झूठ को हटाकर, प्रत्येक
व्यक्ति को अपने पड़ोसी से सच बोलना
चाहिए, क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य हैं।
26गुस्सा तो करो, लेकिन गुनाह मत करो।
सूरज ढलने से पहले तुम्हारा गुस्सा ठंडा
हो जाए। 27शैतान को कुछ भी मौका मत
दो। 28जो इन्सान पहले चोरी किया करता
था, वह आगे को ऐसा न करे। इसके बजाए
उसको अपने हाथ से कुछ भलाई करने के
लिए मेहनत करनी चाहिए, ताकि ज़रूरतमंद
लोगों को देने के लिए उसके पास कुछ हो।
29तुम्हारे मुँह से कोई गंदी बात न निकले,
लेकिन वही जो अच्छी है और तरक्की
(उन्नति) के लिए फ़ायदेमंद है। ऐसी बात जो
सुनने वालों के जीवन में भलाई (अनुग्रह)
लाए। 30तुम परमेश्वर पिता के आत्मा को
दुख न पहुँचाओ, क्योंकि उन्हीं के द्वारा तुम
पर छुड़ाए जाने वाले दिन के लिए मोहर
लगाई गयी है। 31सारी कड़वाहट, तैश में
आना, क्रोध, झगड़ा, बुरा बोलना और

"पहन लो"- कुल. 3:10; रोमि. 13:14; 1 यूहन्ना 2:6. "पहन लो" - यह बाहरी रहन-सहन को दिखाता है। एक विश्वासी के व्यवहार का तालमेल इस से होना चाहिए कि वह मसीह में क्या है। वह नयी रचना है (2 कुरि. 5:17)। ऐसा ही उसका व्यवहार होना चाहिए। कपटी लोग जो कुछ बाहर दिखते हैं, भीतर नहीं होते हैं। विश्वासियों के पास कुछ आत्मिक, वास्तविक और अद्भुत भीतरी बात है। ज़रूरी यह है कि बाहर यह सब दिखे।

"पवित्रता...गया"- 2 कुरि. 5:17 जिस तरह से विश्वासियों में नया स्वभाव पवित्र और खरा है, उसी प्रकार पहले अपवित्र और दुष्ट स्वभाव पहले था।

4:25-32 'उतार देने', 'पहन लेने' का मतलब क्या है, इसे पौलुस स्पष्ट करता है। जो बातें पवित्रता और भलाई के खिलाफ़ हैं, विश्वासियों को उन्हें अस्वीकार करना चाहिए, रोक देना चाहिए।

4:25 पद 15. सच्चाई से हम मज़बूत होते हैं। झूठ बर्बाद करता है। जब मसीही यहाँ असफल होते हैं, तो एक दूसरे के साथ तथा सच्चाई के परमेश्वर के साथ समस्या बनी रहेगी (भजन 31:5)। झूठ और धोखा देना परमेश्वर और लोगों के खिलाफ़ अपराध है।

4:26 भजन 4:4; मत्ती 5:22 पद 31 में जिन बुराइयों के विषय में है, वे क्रोध का नतीजा हो सकती हैं। जैसे ही ये हमारे भीतर उठें हम इन का मुकाबला करें।

4:27 झूठ (असत्य) और गुस्सा दो ऐसी चीजें है, जिनसे मसीही शैतान को मौका देते है कि वह उनके जीवन में उत्पात मचाए। शैतान इसी की तलाश में भी रहता है। 2 कुरि. 2:11; 1 पतर. 5:8.

4:28 "आगे...करे" - जो धन हमें दिया जाता है उसका नाजायज़ इस्तेमाल या उसमें से लेकर इस्तेमाल करना और न लौटाना यह सभी चोरी है। अपने फ़ायदे के लिए झूठा हिसाब-किताब रखना भी चोरी है। यूहन्ना 12:6 से मिलान करें। कुछ लोगों के लिए यह भयंकर परीक्षा है। यह सब देखकर रोना आता है। क्या मसीह को भी रोना नहीं आता होगा? यदि किसी ने ऐसा किया है, आगे को न करे। दूसरे का जो लिया है लौटा दे। क्या परमेश्वर का हमें देखकर मुस्कराना और उनके साथ सहभागिता अनुचित पैसे से बढ़कर नहीं है?

"मेहनत करनी चाहिये....देने के लिए उसके पास कुछ हो"-2 थिस्स. 3:6-10. ईमानदारी से कमाया हुआ धन और दूसरों के साथ मिल बाँटकर इस्तेमाल से स्वर्गिक पिता को आदर सम्मान।

4:29 "गंदी बात"- 5:4; कुल. 3:8; मत्ती 12:36. यदि मसीह हमारे अन्दर हैं, तो हम गंदी भाषा का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं? "तरक्की के लिये फ़ायदेमंद" - हम जो कुछ कहते हैं, हमारा यही उद्देश्य होना चाहिए (पद 12,15,16)।

4:30 "दुख न पहुँचाओ"- पवित्रआत्मा (त्रिएक परमेश्वर का भाग) एक न महसूस करने वाला व्यक्तित्व नहीं है (देखें यूहन्ना 14:16-17)। विश्वासी उन्हें दुखित कैसे करते हैं - झूठ से, गुस्से से, चोरी से, स्वार्थ से, बुरा कहने आदि से। जो बेकार की बात परमेश्वर के लोगों को दुखित करती है, पवित्रात्मा को भी दुखित करती है।

"मोहर लगाई गयी"- 1:13-14 यदि विश्वासी पवित्रात्मा को शोकित करें, तौभी वह उन्हें छोड़कर नहीं चला जाता। लेकिन उनके भीतर काफ़ी पीड़ा होगी।

4:31 दूसरी जो दुष्टता की बातें परमेश्वर के आत्मा को पीड़ित करती है, हमें अलग कर देनी चाहिए - उन्हें हमारे जीवन में रहने का कोई हक्क नहीं है।

चोट पहुँचाने वाली बातें तुम से दूर ही रहें।
32बल्कि तुम तरस से भरे रहो और कृपा
करने वाले बनो। तुम एक दूसरे को माफ़
करने वाले बनो, जैसा परमेश्वर ने मसीह
के कारण तुम्हें माफ़ किया है।

5 इसलिये प्यारे बच्चों की तरह, परमेश्वर
की बात मानने वाले बनो। 2जिस तरह
से मसीह ने हम से प्रेम किया और खुद
को खुशबूदार इत्र की तरह परमेश्वर के
लिए एक भेंट और बलिदान के रूप में
चढ़ा दिया, उसी तरह प्यार-मोहब्बत का
जीवन जीयो।
3जैसा कि पवित्र लोगों के लिए उचित है,
तुम्हारे बीच अनैतिक यौन सम्बन्ध, सभी
तरह की अशुद्धता या लालच जैसी बातें
सुनने में भी न आएँ। 4और तुम्हारे बीच
गंदी और बेवकूफ़ी की बातें, भद्दा मज़ाक
जो उचित नहीं है, न हो, बल्कि धन्यवाद
दिया जाना हो, 5पर तुम यह जानते हो कि
यौन पाप में लिप्त व्यक्ति, अशुद्ध व्यक्ति
और लालची इन्सान की (क्योंकि ऐसे
लोग मूर्तिपूजक हैं), मसीह और परमेश्वर
के राज्य में कोई हिस्सेदारी नहीं है। 6कोई
व्यक्ति तुम्हें खोखली बातों से धोखा न दे,
क्योंकि इसी कारणवश परमेश्वर की सज़ा
आज्ञा न मानने वालों पर आती है। 7इसलिए
ऐसे लोगों के साथ हिस्सेदार न बनो।

4:32 पद 2; रोमि. 12:10,17,19; कुल. 3:12-13. परमेश्वर ने विश्वासियों को पूरी तरह से और मुफ़्त में माफ़ किया है। इसलिए विश्वासियों को चाहिए कि वे उन सब को माफ़ करें जो उन्हें दुख पहुँचाते है। अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो वे परमेश्वर के साथ समस्या में पड़ जाएँगे। मत्ती 6:12,14,15; 18:21-35. अगर हम उन्हें माफ़ नहीं करना चाहेंगे, जो हमें पीड़ा देते हैं, तो हम अपना नुक्सान करते हैं, मसीह का दिल दुखाते हैं और चर्च (मण्डली) में समस्या पैदा करते हैं।

5:1 मत्ती 5:48 । परमेश्वर के बच्चों को अपने पिता की तरह बर्ताव करना चाहिए।

"प्यारे बच्चों"- 1 यूहन्ना 3:1.

5:2 "मसीह...किया"- पद 25, यूहन्ना 13:1; 15:9,12; रोमि. 8:37; गल. 2:20.

"खुद को खुशबूदार इत्र"-मत्ती 20:28; 26:28; यूहन्ना 1:29; रोमि. 3:25; 5:8; 2 कुरि. 5:14; इब्रा. 9:14; 10:10,14; 1 पतर. 2:24; 3:18. खुशबू शब्द ओल्ड टैस्टामॅन्ट के बलिदानों की याद दिलाते हैं, जो कि मसीह के प्रतीक है (लैव्य. 1:9,13,17)।

"प्यार ...जीयो"- 3:19; 4:15; यूहन्ना 13:34; रोमि. 12:10; गल. 5:6,13; 1 यूहन्ना 3:11,16-18; 4:7-8. 2:10 में नोट्स देखें।

5:3 4:1; 1 कुरि. 6:13-18; 1 पतर. 1:14-15; 1 यूहन्ना 2:6.

"लालच"-पद 5; लूका 12:15-21; 1 तीमु. 6:6-10; इब्रा. 13:5; 2 पतर. 1:4.

5:4 4:29; कुल. 3:8.

"धन्यवाद दिया जाना"- पद 20; कुल. 3:17; फ़िलि. 4:6; 1 थिस्स. 5:18; इब्रा. 13:15; भजन 50:14; 113:1; लैव्य. 7:12-13.

5:5 1 कुरि. 6:9-11; गल. 5:21; इब्रा. 10:26-27; 1 यूहन्ना 3:9-10.

"मूर्तिपूजक"- लालची व्यक्ति को मूरत पूजने वाला कहा गया है क्योंकि जिन बातों पर उसका मन लग गया है, उसकी पूजा ही कर रहा है। उसके भीतर उसकी मूर्ति है। यहेज. 14:3-4.

"राज्य"-मत्ती 4:17; रोमि. 14:17; कुल. 1:13 देखें। इस संसार में दो साथ-साथ राज्य हैं। एक लूसीफ़र का (शैतान का) दूसरा यीशु का। हमारे विचार से जो इन्सान 5:5 में बतायी बातों में फँसा हुआ है, संसार में यीशु के राज्य के फ़ायदे नहीं उठा सकता।

5:6 "कोई व्यक्ति तुम्हें खोखली बातों से धोखा न दे"-1 कुरि. 6:9; गल. 6:7; 1 यूहन्ना 3:7-8. कुछ लोग यह दावा करते हैं कि अपनी मर्ज़ी से दुष्टता में लगे रहें, फिर भी दुनिया में और भविष्य में स्वर्गिक पिता के राज्य का आनन्द उठाएँ, ऐसे लोग धोखे में हैं और भूल कर रहे हैं।

"परमेश्वर की सज़ा"- गिनती 23:5; व्यव. 4:25; भजन 90:7-11; यूहन्ना 3:36; रोमि. 1:18 आदि देखें। अगर मुक्ति पाए हुए लोग ऐसे कामों में लगे रहेंगे, तो वे अपनी ज़िन्दगी को शैतान के लिए खोलेंगे जो आकर उन्हें पीड़ित करेगा। परमेश्वर की सज़ा का मतलब यही लगता है। सच्चाई तो यह है कि ऐसे सभी कामों में लगे रहने वाले व्यक्ति ने शायद कभी भी नया जन्म पाया ही नहीं था। फिर भी वह अपनी मुक्ति या यीशु का होने का दावा कर सकता है।

5:7 2 कुरि. 6:14-18 आदि.

8क्योंकि एक समय था, जब तुम
अँधियारा थे, लेकिन अब यीशु में उजाला
हो। इसलिये उजाले (ज्योति) की सन्तान
की तरह जीवन जीयो। 9इसलिए कि रोशनी
का असर सब तरह की अच्छाई, धार्मिकता
और सच्चाई में है। 10यह मालूम करते हुए
कि यीशु को क्या भाता है, 11अँधियारे के
बेकार के कामों के साथ किसी तरह की
साझेदारी मत रखना, लेकिन उन्हें सब के
सामने प्रगट करना। 12क्योंकि उन बातों
के बारे में जिन्हें वे छिप कर करते हैं, मुँह
से कहने में भी शर्म आती है। 13लेकिन वे
सभी बातें जिनका खुलासा किया जाता है,
रोशनी के द्वारा दिखायी देती हैं। इसलिए
कि जो भेद खोलने वाली है, वह रोशनी ही
है। 14इसलिए लिखा है, (वह कहते हैं),
"तुम जो सो रहे हो, जाग जाओ और मरे
हुओं में से जी उठो, और यीशु की रोशनी
तुम्हें मिल जाएगी।"

15इसलिए गौर से देखो कि तुम बेवकूफ़ों
की तरह नहीं, लेकिन अक्लमन्दों की तरह
चलते हो, 16समय की कीमत जानो, क्योंकि
दिन बुरे हैं। 17इसलिए नादान मत बनो,
बुद्धिमानी से समझो, कि यीशु की इच्छा
क्या है। 18नशे से दूर रहो, क्योंकि इस से
ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है, लेकिन पवित्र
आत्मा से भरपूर होते जाओ। 19आपस
में एक दूसरे से और मन में यीशु के लिए

5:8 दुष्ट और अविश्वासी न ही केवल आत्मिक अँधेरे में हैं, वे खुद अँधेरा हैं। इसी तरह विश्वासी न सिर्फ़ उजियाले में हैं, वे खुद प्रकाश हैं (मत्ती 5:14-16)। उनके पास यह एक मौका और ज़िम्मेदारी है कि अपने पद के मुताबिक करें। सृष्टिकर्ता रोशनी हैं (1 यूहन्ना 1:5) इसलिए उसके बच्चे रोशनी के बच्चे हैं। उसी के जो पूरी तरह पवित्र और शुद्ध हैं। इसलिए उन्हें पूरी तरह से पवित्र रहने का अभ्यास डालना चाहिए।

5:9 "असर"- मत्ती 7:17-20; यूहन्ना 15:1-8; रोमि. 7:4.

"अच्छाई"- गल. 5:22.

"धार्मिकता"-4:24; मत्ती 5:6; रोमि. 6:18; 8:4; 14:17-18; 2 कुरि. 5:21; फ़िलि. 1:11; 1 तीमु. 6:11; 1 पतर. 2:24; भजन 15:1-2.

"सच्चाई"- 4:15,21,25.

5:10 रोमि. 12:2; 2 कुरि. 5:9 यीशु के जन का ख्याल यह होना चाहिए कि वह जो कुछ भी करे वह यीशु को पसन्द आये।

5:14 यह बाईबल के पहले भाग में से नहीं है, लेकिन वहाँ के पद जैसे यशा. 60:1; मला. 4:2 में से है। ये शब्द पुराने मसीही गीत के हो सकते हैं।

"मरे हुओं में से जी उठो"- जो लोग अँधेरे में और दुष्टता में रह रहे हैं, आत्मिक रीति से सो रहे हैं, और मरे हैं। उन्हें जी उठने और मसीह के पास आने की ज़रूरत है।

5:15 "अक्लमन्दों"- कुल. 4:5; मत्ती 10:16. विश्वासियों को यह ज्ञान चाहिए कि दुष्ट दुनिया में कैसे रहें।

हमें यह मिल सकता है (याकूब 1:5-6)।

"चलते" या "जीते"- 2:1 के नोट्स पढ़ें। मसीह के लोगों को ऐसे जीना चाहिए कि स्वर्गिक पिता की रोशनी उन में से निकलकर अँधेरे में जाएगी जहाँ लोग दुष्टता में सो रहे हैं और मरे हुए हैं।

5:16 इस दुनिया में हमारी रोशनी चमके इसके लिए हमें मौके ढूँढने चाहिए।

"दिन बुरे हैं"- गल. 1:4; फ़िलि. 2:13; 2 तीमु. 3:1.

5:17 "समझो"- 1:18;4:18; कुल. 1:9; 2:2; रोमि. 12:1-2.

5:18 "नशे"- रोमि. 13:13; 1 कुरि. 5:11; 6:10; गल. 5:21; यशा. 5:11,22; उत्पत्ति 9:21.

"पवित्र आत्मा"- का मतलब परमेश्वर की आत्मा (1:13-14; 2:18,22; 3:16)।

"पवित्र आत्मा से भरपूर होते जाओ"- यह स्वर्गिक पिता की मर्ज़ी हर एक के लिए है। हमारे लिए उनकी जो इच्छा नहीं है वह हमसे नहीं चाहेंगे। विश्वासियों के लिए उसकी बिनती 3:19 में भी है। क्योंकि यह परमेश्वर की मर्ज़ी है हम इसे हासिल कर सकते हैं। (1 यूहन्ना 5:14-15; लूका 11:13)। इसे हम स्वर्गिक पिता के पास सीधे जाकर बिना किसी मनुष्य की सहायता से ले सकते है। प्रे.काम 1:5; 2:4,39 के नोट्स देखें।

"भरपूर होते जाओ"- निरन्तर पाना और उसमें बने रहना। यह सामान्य बात है। निरन्तर भरते रहने का मतलब है बात मानना, आधीन होना और भरोसा। शराब पीने वाला उसके असर में रहता है। पवित्र आत्मा से भरा, पवित्र आत्मा के असर में वह अपने आपे में रहता है। (1 कुरि. 14:32-33)। आत्मा का फल संयम है

भजन, गीत और आत्मिक गीत गाते और
गुनगुनाते रहो। 20हमारे स्वामी यीशु मसीह
के नाम में परमेश्वर पिता को हमेशा सब
बातों में धन्यवाद देते रहो।

21और परमेश्वर के डर में एक दूसरे के
आधीन होते जाओ।

22पत्नियो, अपने पतियों की आधीनता
में ऐसे रहो, जैसे यीशु मसीह के। 23क्योंकि
पति भी पत्नी का प्रधान (सिर) है, जिस
तरह से मसीह, चर्च (देह) के प्रधान हैं,
इसी देह के वह बचाने वाले (उद्धारकर्ता)
हैं। 24लेकिन जिस तरह से चर्च मसीह की
आधीनता स्वीकार करता है, पत्नियों को
भी सभी बातों में अपने पति की माननी
चाहिए।

25पतियो, अपनी पत्नियों से प्यार करो,

(गल. 5:23)। आत्मा के प्रति जान-बूझकर खुशी से आधीन होना है।

इसका मतलब है लगातार भरते जाना और उस स्थिति में बने रहना। हर विश्वासी का यह अनुभव होना चाहिए। नहीं तो और कौन सा तरीका अपने आपको नकारने का है और इसके अलावा जीवन जीने और यीशु की सेवा का और कौन सा तरीका होगा?

5:19-21 पवित्र आत्मा की भरपूरी का चिन्ह क्या है? यहाँ वह चिन्ह, अद्‌भुत काम या आत्मा के वरदान की बात नहीं करता है। लोगों को फ़र्क-फ़र्क वरदान मिले हुए हैं। (रोमि. 12:4-8; 1 कुरि. 12:7-11,28-30)। यह हो सकता है कि एक या तमाम वरदान तो हैं लेकिन आत्मा की भरपूरी के बगैर (1 कुरि. 1:7; 3:1,3)। आत्मा से भर जाना संभव है, और उन वरदानों को न पाना भी जिनके विषय कुछ मसीही लोग बढ़ा-बढ़ा कर कहते है (प्रे.काम 2:4,11; 1 कुरि. 12:10,28-30) पौलुस यहाँ उन बातों के बारे में बतलाता है जो आत्मा की भरपूरी को दिखाती हैं - दूसरे विश्वासियों के साथ खुशी की संगति, परमेश्वर को धन्यवाद देना और एक दूसरे की सुनना। आत्मा का फल (गल. 5:22) उन में अधिक बढ़ता है जो लगातार आत्मा से भरे रहते हैं।

5:19 संगीत और गीत गाना आत्मा से भरे मन से ही होता है।

5:20 यहाँ शब्द "हमेशा" और "सब बातों में" पर गौर करें। देखें 2 कुरि. 4:15; कुल. 2:7; 4:2; 1 थिस्स. 5:18; 1 तीमु. 2:1; इब्रा. 13:15; लैव्य. 7:12-13; भजन 7:17. ऐसा विश्वासी रोमि. 8:28 की वजह से कर सकते हैं, अगर वे आत्मा से भरे होते हैं।

5:21 "डर (भय)"-उत्पत्ति 20:11; भजन 34:11-14; 111:10; नीति. 1:7 देखें।

"आधीन"-पद 22,24; 6:1,5; 1 कुरि. 16:16; इब्रा. 13:17; 1 पतर. 5:5. आधीनता का मतलब है आज्ञा मानना। यह अपनी मर्जी के खिलाफ़ जाना है। अपने घमण्डीपन के उल्टा है।

5:22 "जैसे यीशु मसीह के"-इसका मतलब यह नहीं है कि जिस तरह से यीशु उनके लिए हैं, पति भी हैं। उन्हें मसीह और पति दोनों की बात माननी है। पति के प्रति आज्ञाकारिता है, यीशु के लिये उनकी आज्ञाकारिता है। जैसा उन दिनों था वैसा आज भी होना चाहिए। तुलना करें कुल. 3:18 से और देखें 2 तीमु. 2:11-13; 1 पतर. 3:1-2,5,6. जो पत्नियाँ ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, वे परमेश्वरीय तौर तरीके का विरोध कर रही हैं। इस से उनकी ज़िन्दगी में दुःख आएगा।

5:23 "पत्नी का प्रधान"-इसका मतलब यह नहीं कि स्त्रियाँ पुरूष से कम हैं। इसका मतलब है, कि परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से घर और समाज में एक ढाँचा रखा है। वह चाहते हैं, कि सभी उस को मानें। देखें 1 कुरि. 11:3-16 और नोट्स।

"देह"- पद 30; 1:22-23.

"बचाने वाले"- मसीह मण्डली के छुड़ाने वाले और बचाने वाले हैं।

5:24 "सभी बातों में" - पौलुस ऐसी हालत की बात कर रहा है, जहाँ पति-पत्नी विश्वासी हैं और दोनों ही यीशु के लिए जवाबदार हैं। अगर पति चाहता है कि पत्नी वचन के खिलाफ़ काम करे तो बात नहीं माननी चाहिए। वचन में यह सिद्धान्त प्रे.काम 4:19; 5:29; रोमि. 14:23 में है।

5:25 "प्यार"- पत्नियों का काम है आज्ञा मानना, पति का है प्यार करना। (इसका मतलब यह नहीं कि पत्नी पति से प्यार न करें या पति पत्नी की इच्छाओं को पूरा न करें।) पौलुस ऐसे प्यार की बात करता है, जो दिखता है। पति का प्रेम पत्नी के प्रति बर्ताव में दिखता है। जो पति यहाँ नाकामयाब होते हैं, वे परिवार की तमाम कठिनाईयों और उदासी का कारण बनते हैं।

जिस तरह से यीशु ने चर्च से प्यार किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया, 26ताकि वह उसे वचन के पानी से धोकर शुद्ध करे। 27और मसीह अपने आप के लिए एक तेज से भरा चर्च तैयार करें, जिसमें दाग या झुर्रियाँ न हों, लेकिन पवित्र और निष्कलंक ठहरे। 28इसलिए पतियों को अपनी पत्नियों से इस तरह प्यार करना चाहिए, जैसे वे अपनी देह से करते हैं। जो अपनी पत्नी से प्यार करता है, वह खुद से प्यार करता है। 29कभी भी किसी व्यक्ति अपनी देह से नफ़रत नहीं करता है, लेकिन वह उसकी देखभाल करता है, जैसे यीशु चर्च के साथ करते हैं। 30क्योंकि हम उनकी देह, (मांस और हड्डी) के भाग हैं। 31 "इसलिए एक पुरूष अपने पिता और माता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से जोड़ा जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।" 32यह एक बड़ा रहस्य है, लेकिन मैं तो मसीह और चर्च के बारे में कह रहा हूँ। 33फिर भी तुम में से हर एक व्यक्ति अपनी पत्नी से ऐसा प्रेम रखे, जैसा वह खुद अपने आप से रखता है; पत्नी को भी अपने पति की इज़्ज़त करनी चाहिए।

6 बच्चो, यीशु में, अपनी माताजी और अपने पिताजी का कहना मानो, क्योंकि ऐसा करना सही है। 2"अपने पिता और

"जिस तरह से यीशु ने"- यूहन्ना 13:34 से मिलान करें।

"दिया"-पद 2; गल. 2:20; रोमि. 5:8; यूहन्ना 10:11,15.

5:26-27 देखें कि मसीह मण्डली के लिए क्यों मरे; तुलना करें 1:4; तीतुस 2:14; 1 कुरि. 6:11. वह पूरी तरह से पवित्र हैं और तब तक सन्तुष्ट नहीं होंगे जब तक उनकी मण्डली पूरी तरह से पवित्र नहीं है। पद 27 तब पूरा होगा, जब मण्डली (कलीसिया) यीशु के दोबारा आने पर आकाश मण्डल में मिलेगी (1 कुरि. 15:50-57)।

"वचन के पानी से धोकर"- कुछ विद्वान इसे पानी का बपतिस्मा समझते हैं। लेकिन हम सभी जानते हैं कि वचन से और परमेश्वर के आत्मा से भीतर शुद्धता ज़रूरी है, शुद्धता पर देखें भजन 51:2,7; यहेज. 36:25-26; 37:23; यूहन्ना 13:5,10; 15:3; तीतुस 3:5 (यूहन्ना 3:3-8); इब्रा. 9:14; 1 यूहन्ना 1:7,9.

5:28-29 इसका मतलब यह है कि पति और पत्नी एक देह हैं (पद 31)। इसलिए कि उसकी पत्नी की देह उसकी देह है, उसे चाहिए कि वह पत्नी की देह से ऐसा प्यार करे जैसे खुद की देह से कर रहा हो।

"प्यार करता है"- इसका अर्थ है, वह प्यार, जिससे प्रेरित होकर वह उसके साथ व्यवहार करता है (पद 25)। वह प्यार जो काम में दिखता नहीं है, मसीही प्यार नहीं है - 1 यूहन्ना 3:18. स्वर्ग पर रहकर यीशु प्यार का संदेश नहीं दे रहे थे। वह इस पृथ्वी पर आए और अपने आप को दे दिया (पद 25) वह अभी चर्च (मण्डली) की देखभाल करते हैं।

5:30 1:23; 2:16; 3:6; 4:4,12,16; रोमि. 12:4-5; 1 कुरि. 12:12-13,27.

5:31 उत्पत्ति 2:24.

5:32 इसी कारणवश एक व्यक्ति अपने माता-पिता, भाइयों बहनों को और जो कुछ भी उसके पास है, छोड़ेगा और मसीह के साथ एक किया जाएगा। दो जन "एक" हो जाएँगे (1 कुरि. 6:17; मत्ती 4:18-22; 10:37-39; लूका 14:26-27,33)। पौलुस पति को मसीह की तस्वीर के रूप में और पत्नी को कलीसिया (मण्डली) के रूप में देखता है। तुलना कीजिए 2 कुरि. 11:2; यूहन्ना 3:28-29; प्रका. 19:7.

5:33 क्या यह कहने की ज़रूरत है कि एक पति इस तरह से जिए कि उसकी पत्नी उसे इज़्ज़त दे? या पत्नी इस तरह से रहे कि पति के प्यार को पाए? इस पद में यूनानी शब्द "इज़्ज़त" पद 21 में इसी मूल शब्द से लिया गया है।

6:1 यहाँ पौलुस अभी भी यीशु को अपनाने वालों से बात कर रहा है। बच्चों से यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वे माता-पिता की बात तब माने जब उन्हें परमेश्वर के वचन के खिलाफ़ करने के लिए कहा जाता है। लेकिन उन सभी दूसरी बातों में उन्हें आज्ञा माननी ही चाहिए। माता-पिता की बात को न मानना विद्रोही और गंदे स्वभाव को दिखाता है। जो बच्चा ऐसा करता है वह परमेश्वर के प्रति भी यही करेगा। रोमि. 1:30.

6:2-3 निर्ग. 20:12; व्यव. 5:16 । विश्वासियों को नियमशास्त्र का पालन नहीं करना है (रोमि. 6:14-15; 7:4; गल. 3:25)। लेकिन खरा जीवन

माता का आदर करना", ऐसी पहली आज्ञा है, जिसके साथ एक वायदा जुड़ा हुआ है। 3वह वायदा यह है "कि तुम्हारा भला हो और इस दुनिया में तुम लम्बे समय तक जीवित रहो"।

4बच्चे वालो, अपने बच्चों को गुस्सा करने के लिए मत उकसाओ, लेकिन यीशु की सहायता से (शिक्षा से) पालन-पोषण और डाँट-डपट करो।

5हे नौकरो, डरते-काँपते और मन की सच्चाई से अपने मालिक की आज्ञा का पालन इस तरह करो, जैसे कि यीशु के सेवक हो। 6तुम दिखाने या लोगों को खुश करने के लिए सेवा मत करो, लेकिन मसीह के गुलाम की तरह उन्हीं की सेवा समझकर 7दिल से परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी करने के लिए सेवा करो। 8यह जानते हुए कि जो व्यक्ति भला करता है वह चाहे नौकरी करता हो या खुद का व्यवसाय चला रहा हो, उसे यीशु मेहनताना देंगे।

9तुम मालिको, अपने नौकरों को धमकी मत दो। उनके साथ भला व्यवहार करो।

उन में होना चाहिए (रोमि. 8:4) माता-पिता के लिए आज्ञा 'सही' है (पद 1) अगर मसीही बच्चे अपने माता-पिता की नहीं मानते, तो उन्हें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि इस पृथ्वी पर उनका भला होगा, और लम्बी आयु मिलेगी।

6:4 बच्चों के साथ बेइन्साफ़ी और कठोरता या बिना सोचे विचारे कहना उन्हें गुस्सा दिलाएगा। अनुशासन बहुत ज़रूरी है। (नीति. 13:24; 19:18; 22:15; 23:13-14; इब्रा. 12:7-8)। लेकिन यह अनुशासन (नीति. 23:13-14; इब्रा. 12:7-8) प्यार से किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे समझें कि बच्चों को माता-पिता के सुपुर्द स्वर्गिक पिता ने किया है। वे परमेश्वर के हैं (यहेज. 18:4)। परमेश्वर ने माता को यह ज़िम्मेदारी और मौका दिया है, कि वे उन्हें सिखाएँ और संभाले। अपने कामों और शब्दों से उन्हें बच्चों की मदद करनी चाहिए, ताकि वे वही बनें जो वह चाहते हैं। (व्यव. 6:6-7; भजन 34:11; 78:4-8)। अगर माता-पिता अपनी इस ज़िम्मेदारी को हल्का-फुल्का समझेंगे, उन्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, जब बच्चे गुमराह हों और पीड़ा पहुँचाएँ।

6:5 "गुलाम" या "नौकर"- यूनानी भाषा में शब्द इन दोनों के लिए एक ही है। पौलुस यहाँ उन सभी के बारे में कह रहा है जो किसी के हाथ के नीचे हैं न कि तनख्वाह पाने वाले नौकर। पुराने समय में गुलामी आम बात थी। पशुओं की तरह बाज़ार में इन्सान को लाया और बेचा जाता था। इन में से बहुत से युद्ध में बनाए गए बन्दी थे या उनकी सन्तान। कुछ शहरों में लोगों से ज़्यादा गुलाम हुआ करते थे। ऐसे बहुत से गुलाम यीशु को मानने लगे थे। उन्हें अब क्या करना चाहिए? बलवा कर के क्या उन्हें भाग जाना चाहिए? बाईबल यह नहीं सिखाती। (1 कुरि. 7:20-24. कुल. 3:22; 4:1; 1 तीमु. 6:1-2; तीतुस 2:9-10; 1 पतर. 2:18-25 भी देखें)।

बाईबल का यह कहना नहीं है कि गुलामी अच्छी है। यह सिर्फ़ यह दिखाती है कि उस स्थिति में भी दास और गुलाम की ज़िम्मेदारियाँ क्या थीं। यीशु के लोगों ने यह जाना, कि यह रीति प्यार के जीवन के खिलाफ़ है (रोमि. 12:10; 13:8-10 आदि)। जहाँ संभव था वे गुलामी को खतम भी कर सके। जहाँ यीशु की शिक्षा को अपनाया जाता है वहाँ गुलामी बनी नहीं रह सकती। गुलामी पर और जानकारी के लिए निर्ग. 21:3 पर नोट्स देखें।

6:6-8 पौलुस कहता है कि अपनी आज़ादी से बढ़कर और भी मुद्दे हैं। मसीह की मानना, सृजनहार की इच्छा का पूरा करना, गुनाह की गुलामी से आज़ाद होना, जिस परिस्थिति में हैं उसके लिए सही रवैया होना यह सब से ज़रूरी बातें हैं चाहे कोई गुलाम हो या गुलाम रखने वाला।

"मसीह के गुलाम"- रोमि. 6:16-18,22; 1 कुरि. 9:19.

6:8 "मेहनताना"- मत्ती 5:12; 10:41-42; 16:27; 1 कुरि. 3:8,14; इब्रा. 10:35; प्रका. 11:18; 22:12.

6:9 विश्वास रखने वाले गुलाम जिस तरह से मसीह की मण्डली (देह) के अंग थे, उतना ही उनके रखने वाले विश्वासी मालिक। उन दोनों का ही सिर (प्रधान) यीशु हैं, जो सब के मालिक हैं। इसलिए मालिकों को चाहिए कि यह जानते हुए बर्ताव करें। यही बात वहाँ लागू होती है जहाँ मालिक और नौकर का सवाल है।

यह जान लो कि तुम्हारे मालिक परमेश्वर स्वर्ग में हैं और वे किसी का पक्षपात नहीं करते हैं।

10 अन्त में, मेरे भाइयो प्रभु में और उनकी शक्ति के प्रभाव से मज़बूत होते जाओ। 11 परमेश्वर के सभी हथियारों (गुणों) को पहन लो, ताकि तुम शैतान की बुरी चालों के सामने खड़े रह सको। 12 क्योंकि हम इन्सान के विरोध में नहीं हैं परन्तु आकाश-मण्डल में प्रधानों, अधिकारियों, इस संसार के अन्धकार के हाकिमों और दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से संघर्ष करते हैं। 13 इसलिए तुम परमेश्वर के सभी हथियारों को स्वीकार कर लो, ताकि तुम बुरे दिन

"पक्षपात नहीं करते"- रोमि. 2:11; कुल. 3:25; 1 पतर. 1:17. हम ने क्या किया, कहा है, रवैया क्या है, इस आधार पर हमारा इन्साफ़ होगा, न कि समाज में हमारी जगह क्या है।

6:10 "यीशु में मजबूत"- 1:19-21; 3:16; 1 कुरि. 16:13; 2 कुरि. 12:10; फ़िलि. 4:13; कुल. 1:29; 1 तीमु. 1:12; 2 तीमु. 2:1; इब्रा. 11:34; यहोशू 1:6-7,9,18; भजन 18:32-36; यशा. 40:30-31; रोमि. 8:37. विश्वासी युद्ध क्षेत्र में हैं। वे सैनिक हैं (1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 2:3-4; 4:7)। उन्हें तैयारी के साथ युद्ध कर के जीत हासिल करनी चाहिए। उनकी अपनी ताकत और इच्छा शक्ति इसके लिए काफ़ी नही है। उन्हें पिता की शक्ति चाहिए। उन्हें चाहिए कि यीशु पर दृष्टि डालें, भरोसा रखें (1 यूहन्ना 5:14-15) हमें बाईबल को नज़रअदाज नहीं करना है। पूरी बाईबल इसलिए है कि हम युद्ध के लिये मज़बूत बनें।

6:11 "सभी हथियारों" - परमेश्वर के गुणों को पहन लो- पौलुस ने बड़ी आशीषों के बारे में बताया था (1:3) बड़ी मुक्ति के बारे में (1:13-14) बड़ी समझ, बड़ी शक्ति, बड़ा प्यार (1:18-19; 3:17-19) हमें यह नहीं समझना चाहिए कि मसीही जीवन बड़ा आसान होगा। हमें इस बात से हक्का-बक्का नहीं हो जाना चाहिए कि उसका हमला हम पर होता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो आश्चर्य करना चाहिए (1 पतर. 5:8)। यहाँ पौलुस एक रूपक का इस्तेमाल करता है। अधूरे हथियार का मतलब अधूरी सफ़लता नहीं है। अधूरे हथियार से कोई सफ़लता नहीं मिलती है। इस से तो वे खतरे के हालत में रहेंगे। मसीह में हम विश्वासियों के लिए परमेश्वर ने आत्मिक हथियारों का इन्तज़ाम किया है। हमें यह समझना चाहिए कि यह हथियार कौन से हैं। हमें इन को पहनना भी चाहिए। न हो कि हम मुक्ति का टोप तो पहन लें और छाती के लिए धार्मिकता की झिलम न पहनें। अगर हम पूरे हथियार न पहनें तो शैतान के तीरों के खिलाफ़ खड़े नहीं रह पाएँगे। अगर हम गिर जाएँ तो निश्चित रहें कि शैतान हमसे लड़कर तमाम ज़ख्म देना चाहेगा। मत्ती 4:1-10; यूहन्ना 8:44 में शैतान पर नोट्स देखें।

"बुरी चालों"- 2 कुरि. 2:11 विश्वासियों का एक चालाक शत्रु है, जो चाहता है कि उनको गिराने के लिए, हराने के लिए कुछ करे।

6:12 शैतान विश्वासियों से लड़ने के लिए अकेला नहीं है। अनदेखे आत्मा के दायरे में (स्वर्गीय स्थानों - 1:3 के नोट्स देखें)। तमाम दुष्ट आत्माएँ उसी की तरफ़ हैं। शैतान शासक है और इस दुनिया का "ईश्वर" भी (यूहन्ना 12:31; 2 कुरि. 4:4) इसके अलावा उसके साथ काम करने वाले दूसरे भी हैं (दानि. 10:13,20; 1 तीमु. 4:1; प्रका. 16:14)। ये वे दुष्टआत्माएँ (गिराए गए स्वर्गदूत) हैं, जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ़ बगावत की थी। ये बहुत से ईश्वर हैं जिन्हें आज पूजा जा रहा है। (1 कुरि. 8:5; 10:20; व्यव. 32:17; भजन 106:37. ये "ईश्वर" लोगों को कायल करने की कोशिश करते हैं कि वे अच्छे हैं, परमेश्वर हैं या सर्वश्रेष्ठ प्रभु और दुष्टात्माओं को नाश करने वाले हैं।)

6:13 "इसलिए"- बिना परमेश्वर के हथियार हम दुष्ट शक्तियों, उनकी धोखे की चाल और हमें नाश करने की उनकी रणनीति के खिलाफ़ कैसे खड़े हो सकते हैं? 'ले लो' - यह दिखाता है कि हथियार हम इस्तेमाल कर सकते हैं। यह कहाँ हैं ? मसीह में या हमें कहना चाहिए कि यह स्वयं मसीह हैं। रोमि. 13:14 से तुलना करें । इस पद से हमें यह मदद मिलनी चाहिए कि हम जानें कि हथियार बान्धने (पहनने) का मतलब क्या है। इसका मतलब है यीशु द्वारा प्रगट किए गए सत्य का अध्ययन, समझना, विश्वास करना और अपने जीवन में लागू करना। यह पहनना पहले मन, हृदय, आत्मा और फिर बाहरी आचार-व्यवहार में है।

"बुरे दिन"- यह पूरी पीढ़ी दुष्ट है (गल. 1:4)। जिन दिनों में पौलुस ने लिखा था, वे भी बुरे दिन थे (5:16)। हर एक विश्वासी के लिए परीक्षा या प्रलोभन के ऐसे खास समय आएँगे, जब न दिखने वाली ताकतें खास कोशिश कर के उसे हराना चाहेंगी। हमें नहीं मालूम ऐसा समय कब

में सब कुछ सामना करने के बाद स्थिर रहो। 14इसलिए सच्चाई की पेटी (बेल्ट) से अपनी कमर कसकर और धार्मिकता की झिलम पहनकर, 15और पाँवों में मेल

आ जाएगा। इसलिए हर दिन हमें तैयार रहना चाहिए । बिना किसी चेतावनी अकस्मात, वह हमला बोल सकता है। तुलना करें अय्यूब 1:6-19; 2 शमू. 11:2; उत्पत्ति 3:1. हमें सतर्क रहने की ज़रूरत है (1 पतर. 5:8)।

"स्थिर रहो" - चार पदों में यह चौथी बार है जब पौलुस इस शब्द का इस्तेमाल करता है। हम शैतान को मौका न दें कि वह हमारे ऊपर उसकी कोई चाल चले। हमें पीठ दिखाकर भागना भी नहीं चाहिए। जब दूसरे युद्ध में लगे हैं, हमें आलसी नहीं होना चाहिए। युद्ध को यीशु के हाथ में छोड़कर, हमें संघर्ष से मुँह भी नहीं चुराना चाहिए। मसीह हमारे भीतर और हमारे साथ हैं, लेकिन हमें युद्ध करना चाहिए। इस आत्मिक युद्ध क्षेत्र में हम मूक दर्शक रह कर जीत की कामना नहीं कर सकते। डटे रहकर सारी दुष्ट शक्तियों से मुकाबला करना चाहिए। जीत को सामने रखकर, डट कर, बिना डरे सामना करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो युद्ध शुरू होने से पहले ही हम हार चुकेंगे। यहोशू 1:17 में नोट्स देखें। पौलुस छः हथियारों की बात करता है। देखें - पीठ के लिए कुछ भी नहीं है। जो लोग अपनी पीठ दुश्मन को दिखाते हैं, उनके लिए कोई सुरक्षा नहीं है।

6:14 "सच्चाई की पेटी"-विश्वासी के जीवन और युद्ध में सच्चाई आधार है। यहाँ पौलुस विश्वासी के सच्चेपन और ईमानदारी की बात नहीं करता है। हालाँकि सभी विश्वासियों को सच्चा और ईमानदार होना चाहिए (4:15,25 आदि)। लेकिन क्या हम अपनी सच्चाई और ईमानदारी के आधार पर दुश्मन शैतान के सामने खड़े हो सकते हैं? उस से युद्ध में जीतने के लिए हमें उस सच्चाई की ज़रूरत है, जिसे परमेश्वर ने वचन में प्रगट किया है। यूहन्ना 8:31-32; 17:17-18. यीशु जो सत्य हैं, ज़रूरी है कि हम उन्हें पहन लें (यूहन्ना 14:6)। सच्चाई हमें शैतान के कब्ज़े से मुक्त करती है और जीने के लिए, युद्ध करने के लिए योग्य बनाती है।

अपने बचाव के लिए सच्चाई का इस्तेमाल करना ज़रूरी है। पद 17 में हमला करने के लिए इसके इस्तेमाल के बारे में है। हमें सत्य के अनुसार विश्वास करना, समझना और व्यवहार करना चाहिए। नहीं तो न हम अपना बचाव कर पाएँगे न ही शैतान के साथ इस युद्ध में आक्रमण कर पाएँगे। खास बात यह है कि हम सुसमाचार को समझें और विश्वास करें (4:21; 2 थिस्स. 2:13-14; तीतुस 1:1; 1 पतर. 5:8-9; यूहन्ना 14:6)। सच्चाई के पटुके को कसने का मतलब है, हमारे दिमागों को बाईबल की सच्चाईयों और मसीह से भरना और तैयार रहना कि जब हमला महसूस हो तो वचन को लागू किया जा सके।

"धार्मिकता की झिलम"- 1 थिस्स. 5:8 से तुलना करें। यहाँ पौलुस विश्वासियों की उस कोशिश के बारे में बताता है जो खरा जीवन जीने के सम्बन्ध में है। इस में शक नहीं कि हम सभी को खरा जीवन जीना चाहिए (4:1,22-24)।

क्या इसी से हम शैतान को हराने के लिए शक्तिशाली बनते हैं? यह मसीह और जो कुछ वह हैं, उसे दिखाता है। वह हमारी धार्मिकता हैं (1 कुरि. 1:30; 2 कुरि. 5:21)। हम मसीह और उनकी धार्मिकता में शैतान के खिलाफ़ खड़े होते हैं, या बिल्कुल ऐसा नहीं करते। मसीह में विश्वासियों को परमेश्वर निर्दोष ठहरा चुके हैं। साथ ही वह हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हमें खरा बनाना चाहते हैं। शैतान के खिलाफ़ खड़े होने के लिए हमें इस धार्मिकता या निर्दोषता के दोनों पहलू चाहिए - एक वह धार्मिकता (निर्दोषता जो हमें स्वर्गिक पिता से मिलती है। रोमि. 3:22-26; 5:1; 8:1), दूसरी वह जो पवित्र आत्मा से परमेश्वर हमारे जीवन में करते हैं। रोमि. 8:4.

धार्मिकता (निर्दोषता) की झिलम ले लेना और उसे पहने रहना, हमारे मन में निरन्तर विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता को याद रखना है। वह यह कि हमें स्वर्गिक पिता ने निर्दोष (धर्मी) ठहराया है। और खरा जीवन जीने के लिए बुलाहट दी है। इसका मतलब है "नए मनुष्य" (4:24) को पहन लेना परमेश्वर के गुणों को पहन लो। इसका मतलब है स्वर्गिक पिता के साथ सही सम्बन्ध रखना और जानना कि परमेश्वर द्वारा दी गयी सच्चाई के ऊपर हम टिके हुए हैं। इसी में यह भी आता है कि हम मुँह से अपनी स्थिति को कबूल करने के साथ हर बुराई को दूर करते जाएँ, यह जानते हुए कि हमें हर तरह की गंदगी से शुद्ध किया गया है (1 यूहन्ना 1:9)। हमें यह ज्ञान और भरोसा रखना चाहिये नही तो शैतान हमें ज़ख्मी करेगा। क्या यह सच नहीं कि यदि हम अपनी धार्मिकता (भले काम, दान-पुण्य) पर भरोसा रखेंगे, तो वह बिना किसी तकलीफ़ के हमें गिराएगा?

के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर 16उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर मज़बूत, जिससे तुम दुष्ट के जलते तीरों को बुझा सको। 17मुक्ति (उद्धार) का टोप और पवित्र आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। 18सब

6:15 "मेल के सुसमाचार की तैयारी"- यहाँ पौलुस दूसरों को सुसमाचार देने के लिए तैयार होने की बात नहीं कर रहा है। शैतान के ऊपर विश्वासियों की जीत का एक भाग है "उनकी गवाही के शब्द" । यहाँ वह कहना चाहता है कि शैतान के खिलाफ़ हमें डट कर खड़े रहना है। वह यह भी जानता था कि सिर्फ़ यीशु का संदेश ही हमें उसके लिए तैयार कर सकता है। हमारे आत्मिक पैर सुसमाचार से जुड़े रहने चाहिये। दूसरों शब्दों में हमें सुसमाचार को जानना है। भरोसा करना है, चाहना है। यह भी कि इसके कारण ही हमारा मेल स्वर्गिक पिता से हुआ है। इसे अपनी जीवन शैली में लागू करना है। यह भी मसीह को पहनना है। वह स्वयं सुसमाचार हैं और हमारी सुलह (2:14; 3:8)।

6:16 "विश्वास की ढाल"- दुष्टता करने के लिए शैतान हमारे सामने बहुत तेज परीक्षा लाता है। यह भी कि हम संघर्ष छोड़कर आराम और विलासिता ढूँढें और अपने आप के लिए जीएँ। हम कैसे यह कर सकते हैं कि हमारे दिमाग में ये तीर न चुभें, जिससे हमारी संघर्ष की क्षमता खतम न हो। विश्वास के वरदान से परमेश्वर हमें यह देते हैं। इब्रा. 11 में देखें कि विश्वास क्या है और क्या करता है। 1 पतर. 5:9 देखें। अगर हम शैतान को हराना चाहें तो, हमें मसीह के वचन पर भरोसा रखना है। हमें भरोसा रखना है कि वह हमारे साथ हैं। भरोसा रखें कि वह हमारे साथ हैं। वह हमें संघर्ष के लिए ताकत देंगे। हम शैतान के भेजे सभी तीर को बुझा सकेंगे। यह पौलुस का आश्वासन है और हमारा हो सकता है (रोमि. 8:31,37; 2 कुरि. 2:14; 2 तीमु. 4:18)। हम विश्वास से यीशु को ओढ़ लेते हैं और सफ़लता से दुश्मन का मुकाबला भी कर सकते हैं।

6:17 "मुक्ति का टोप"-1 थिस्स. 5:8; यशा. 59:17. टोप सिर के लिए है। परमेश्वर के आत्मिक सैनिक होने की वजह से अपने मन को मुक्ति के विचारों से भरें। हमें समझना है कि मुक्ति है क्या। यीशु खुद अपने लोगों के लिए मुक्ति हैं। हमें उन्हीं को पहनना है। (भजन 18:2-3,17; 27:1; यिर्म. 3:23; लूका 2:30; 1 कुरि. 1:30; 2 तीमु. 2:10)।

"आत्मा की तलवार"- तलवार का इस्तेमाल खुद को बचाने और दूसरे पर हमला करने के लिए किया जाता है। मत्ती 4:1-11 देखें कि यीशु किस तरह से इसका उपयोग करते हैं। यही काम यीशु के लोग भी कर सकते हैं। लेकिन ज़रूरी यह है कि वचन को जानें, समझें और अपनी परख के समय में इस्तेमाल करें। इसलिए बाईबल से प्यार करें, अध्ययन करें और अपने दिल दिमाग में भर लें। 4:13-14; कुल. 3:16; 2 तीमु. 2:15; 3:16-17.

सृजनहार के वचन को आत्मा की तलवार क्यों कहा गया है? क्योंकि उनकी आत्मा ने इसे लिखवाया, वह समझा भी सकता है (1:17-18; यूहन्ना 16:13; 1 कुरि. 2:10-14)।

6:18 परमेश्वर के सैनिकों के बारे में वह अपनी बात जारी रखता है। आत्मिक दुश्मन के ऊपर जीत का तरीका वह दिखा रहा है। वह जानता है कि बिना पिता के सहभागिता आत्मिक हार है। शैतान तब काँपता है जब वह विश्वासियों को स्वर्गिक पिता के साथ संगति करते देखता है क्योंकि बिनती करने से हम परमेश्वर को अपने संघर्ष में लाते हैं। वह कह रहा है कि बिना प्रार्थना, हथियार हमें बचा नहीं पाएगा।

प्रार्थना पर नोट्स देखें। उत्पत्ति 18:32; भजन 66:18; यिर्म. 33:3; दानि. 10:13; मत्ती 6:5-13; 7:7-11; 26:41; मरकुस 11:24-25; लूका 11:5-13; 18:1-14; यूहन्ना 14:13; 15:7; 17:1-26; प्रे.काम 1:14; रोमि. 8:26; 12:12; फ़िलि. 4:6; कुल. 4:2; 1 थिस्स. 5:17; इब्रा. 4:16; 10:19-22; याकूब 5:13,16; 1 पतर. 4:7. सुसमाचार (खुशी की खबर) और मसीही सिद्धान्तों के बारे में सही विचार रखना ज़रूरी तो है, लेकिन यह काफ़ी नहीं है। हमारे संघर्ष में, बिना प्रार्थना के आत्मिक बल नहीं मिलेगा। हमें "आत्मा में" प्रार्थना करना है 2:18; रोमि. 8:26; यहूदा 20. इसका मतलब है परमेश्वर का आत्मा। अपनी प्रार्थना में हमें उसके प्रति समर्पित होना और उसी की इच्छा में प्रार्थना करनी है। हर हालत में, हर तरह की प्रार्थना हमें करनी है (तुलना करें 1 तीमु. 2:1) चाहे वह मन की हो,

तरह की बिनतियों (प्रार्थनाओं) के साथ हर समय पवित्र लोगों के लिए निरन्तर धीरज से प्रार्थना करते रहो।,

19 और मेरे लिए भी प्रार्थना करो, इसलिये कि बोलने का अवसर मिलने पर सुसमाचार के रहस्य को साहस से बताने के लिए मैं अपना मुँह खोल सकूँ। 20 इसी कारणवश मैं जंजीर में जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। प्रार्थना करो ताकि जिस तरह से हिम्मत से मुझे संदेश देना चाहिए, मैं दे सकूँ।

21 तुखिकुस जो प्रिय भाई और मसीह का विश्वसनीय सेवक है, सब कुछ तुम्हें बताएगा, ताकि तुम मेरी हालत जान सको कि मैं क्या कर रहा हूँ। 22 इसी वजह से मैंने उसे तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम हमारी हालत जानो और वह तुम्हारे दिलों (मनों) की हिम्मत बढ़ाए।

23 हमारे भाइयों और बहनों को यीशु मसीह और परमेश्वर पिता की ओर से शान्ति और विश्वास के साथ प्रेम प्राप्त हो। 24 जो लोग सच्चाई से यीशु मसीह से प्यार करते हैं, उनके ऊपर अनुग्रह (कृपा) बना रहे।

मुँह से की जाने वाली हो या लोगों के बीच में।

"पवित्र लोगों के लिये"- इस युद्ध में सभी विश्वासी आत्मिक दुश्मनों के खिलाफ़ हैं और एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। क्या दूसरों के लिए हमारी प्रार्थनाएँ मददगार हो सकती है। हाँ। प्रभु ने इसे ठहराया भी है।

6:19-20 "मेरे लिए भी प्रार्थना करो" - रोमि. 15:30; 2 कुरि. 1:11; फ़िलि. 1:19; कुल. 4:3; 1 थिस्स. 5:25; 2 थिस्स. 3:1. पौलुस एक बड़ा प्रेरित था जो आत्मा से भरा सफ़ल फ़ौजी था।

"सुसमाचार के रहस्य"-इसका मतलब है सु-संदेश परमेश्वर का एक प्रकाशन (रोशनी) है। इसके बिना लोग इसे जान नहीं सकते थे।

"साहस से"- प्रे.काम 4:13,29,31; 28:31.

6:20 "जकड़ा हुआ राजदूत"- 3:1; 2 कुरि. 5:20.

6:21-22 "तुखिकुस"- प्रे.काम 20:4; कुल. 4:7; 2 तीमु. 4:12; तीतुस 3:12.

6:23 "विश्वास के साथ प्रेम"-प्रेम सच्चे विश्वास के साथ बहता है (गल. 5:6)। प्यार और विश्वास की शुरूआत यीशु और स्वर्गिक पिता से है।

6:24 सभी सच्चे विश्वासी मसीह से सच्चा प्यार करते हैं (1 कुरि. 16:22; 1 यूहन्ना 4:8)। यूनानी भाषा के शब्द 'सच्चाई' का मतलब है जिसमें भ्रष्टता नहीं है। यह वही शब्द है जिसे 1 कुरि. 15:42,50,53,54 में जी उठे विश्वासियों के लिए इस्तेमाल किया गया है। (1 कुरि. 13:1) इसलिए बिना मिलावट का और न मिटने वाला है।